ऑयल इंडिया लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
Oil India Limited
(A Government of India Enterprise)

छमाही हिंदी गृह पत्रिका

ऑयल किरण

অইল কিৰণ OIL KIRAN | 2017 | वर्ष 14 | अंक 22

अध्यक्ष की कलम से

शिशु को भाषा उसके माता पिता के द्वारा एक अनुभव के रूप में प्राप्त होती है। माता पिता की भाषा के द्वारा ही उस बच्चे के सामने संसार खुलता है, और इसी भाषा के द्वारा ही वह शिशु रचा जाता है, इसी से उसका निर्माण होता है। एक शिशु के लिए भाषा सिर्फ भाषा ही नहीं होती है वरन यही उसका संसार है इसी में वह सब कुछ सिखता है। शायद यही कारण है शिशु मनोवैज्ञानिक भी बच्चों की प्राथमिक शिक्षा के लिए उसकी मातृभाषा को ही ज्यादा उपयुक्त मानते हैं। हिन्दी के महान लेखक भारतेन्दु हरिशचंद्र लिखते हैं कि –

पढ़ो लिखो कोई लाख विध, भाषा बहुत प्रकार।
पर जब ही कुछ सोचियो, निज भाषा अनुसार।।

अर्थात आप कितना भी पढ़ लें लिख लें परंतु जब भी आप कुछ मौलिक रचना चाहेंगे और उस संबंध में कुछ विचार करना चाहेंगे तो आप को अपनी मातृभाषा का सहारा लेना ही पड़ेगा। आप की अपनी मातृभाषा आपके अवचेतन मन में हमेशा विद्यमान रहती ही है, क्योंकि अतिशय मनोवेग की अवस्था में आप इसी का प्रयोग करते हैं। आप की अपनी मातृभाषा से आपका लगाव ही आप को अन्य भाषाओं के मध्य सहोदरता का भाव विकसित करने में सहायक होता हे। यही सहोदरता हमें "वसुधैव कुटुम्वकम" तक ले जाती है। जिससे हमारे सामने पूरा संसार खुलता है और हम इसमें अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हैं।

अतः आपसी संवाद को और अधिक मजबूत बनाने, आपसी सहोदरता को और अधिक विकसित करने एवं भाय चारे को सुदढ़ करने हेतु हमें अपनी मातृभाषा के साथ ही साथ अपनी सभी भारतीय भाषाओं के मध्य एक सांमजस्यपूर्ण सेतु का निर्माण करना ही होगा।

प्राणजित डेका
(प्राणजित डेका)
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ऑयल

संपादकीय

हिन्दी के विभिन्न मंचो पर आप को दो तरह के विचार मिलेंगे। पहला तो लोग आप को यह कहते हुए मिलेंगे कि हिन्दी के शुद्ध रूप को ही प्रयोग में लाया जाय, ये लोग मुख्यतः शुद्धतावादी लोग हैं। इन्हें हिन्दी का शुद्ध रूप या यू कहें कि संस्कृतनिष्ठ रूप ज्यादा पसंद है इस प्रकार के लोग राजमहल को अट्टालिका कहना ज्यादा पसंद करते हैं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो हिन्दी के उस रूप के पक्षधर हैं जो आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होती है। इनके यहां यह 'दिल मांगे मोर' भी हिन्दी ही है जबकि शुद्धतावादी लोग इसे नकारते हुए दिखाई देंगे। भाषा को हमेशा प्रवाहशील होना चाहिए और इस प्रवाहशीलता में वह अपने आप का परिष्कार करती हुई आमजन के जितना ज्यादा करीब होती जायेगी, वह भाषा आमजन के लिए उतनी ही ज्यादा ग्राह्य होगी। भाषा का लचीलापन ही उसका सौंदर्य है। इतिहास गवाह है कि विश्व की जिन भी भाषाओं ने इस गुण को नहीं अपनाया आज उनका अस्तित्व या तो मिट चुका है नहीं तो मिटने के कगार पर है। भाषा को प्रवाही बनाते समय यदि हम उसकी व्याकरणिक संरचना को सही रखते हुए उसे उसके सरलतम रूप में प्रयोग करें तो वह उस भाषा की आदर्श स्थिति होगी। हिन्दी भी आज के इस बाजारीकरण के दौर में अपना विकास कुछ इसी रूप में कर रही है और आज लगभग सभी लोग इसकी पाचन शक्ति को स्वीकार करते हैं। हिन्दी के महान कवि कबीर दास भी जब यह कहते हैं कि "भाखा बहता नीर" तो शायद वें भी भाषा के इसी स्वरूप की कल्पना कर रहें होंगे।

शैलेश त्रिपाठी
(डॉ. शैलेश त्रिपाठी)
सहायक हिन्दी अधिकारी

इस अंक में

संस्कार 1
स्वास्थ्य पर निबंध 2
मोहब्वत 3
हमारी नन्ही सी मेहमान - पूसी (मैंगो) 4
हार-जीत 5
योग और स्वास्थ्य 6
बहुत कुछ 7
मासूमियत के युग पर लौटें 7
आज हम किस राह पर 8
नया सवेरा 9
बाजार ने दी हिंदी को मजबूती 10
व्यथा 11
हिंदी को सहज और सरल बनाने का आसान तरीका 12
संघर्ष का सौंदर्य (लघुकथा) 12
या इलाही ये माजरा क्या है? 13
बहरी बीवी 14
ठाकुर का कुआँ 15
बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ 16
हिंदी की बहुत प्रगति हुई है 17
जिंदगी 18
बाजार से बढ़ेगा हिंदी का रुतबा 19
एक विनती 21
चाहत 21
पछतावा 22
उतार फेंक दो 22
धरती पानी आकाश 23
धरती माँ की पुकार 23
अब चलता हूँ मैं 24
मुहि 25
खिलती कलियाँ 25
संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ऑयल नोएडा..... 26
ऑयल के हिंदी अधिकारियों की समन्वय बैठक..... 26
कोलकाता कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी..... 27
क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में एक दिवसीय हिंदी..... 27
ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना..... 28
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यान्वयन..... 28
पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यशाला..... 29
हिंदी प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत परीक्षाओं में..... 29

सलाहकार
श्री प्राणजित डेका
कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन)
श्री दिलीप कुमार भूयां
उप महाप्रबंधक (जन संपर्क)
प्रधान सम्पादक
डॉ. शैलेश त्रिपाठी, सहायक हिन्दी अधिकारी, दुलियाजान
संपादक मंडल
डॉ. रमणजी झा, मुख्य प्रबंधक (रा. भा.) नोएडा
डॉ. वी. एम. बरेजा, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) कोलकाता
श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (रा. भा.) जोधपुर
श्री नारायण शर्मा, उप प्रबंधक (रा. भा.) गुवाहाटी
सम्पादन-सहयोगी
श्री दीपक प्रसाद, श्री विजय कुमार गुप्ता, श्री दिगन्त डेका

पत्रिका में प्रकाशित लेख/ रचनाओं आदि में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। 'ऑयल' राजभाषा अनुभाग तथा सम्पादक का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

निःशुल्क एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित।

संपादकीय कार्यालय :
राजभाषा अनुभाग, जन संपर्क विभाग
ऑयल इंडिया लिमिटेड
डाकघर : दुलियाजान 786 602, जिला : डिब्रूगढ़ (असम)
ई-मेल : hindi_section@oilindia.in

मुद्रक : दुलियाजान प्रिन्टिंग वर्क्स, दुलियाजान, दूरभाष : 0374-2800246

संस्कार

विजय कुमार बनर्जी
लेखा अधिकारी
लेखा विभाग

हम बचपन से ये सुनते आयें हैं कि बच्चे का संस्कार कितने अच्छे हैं या बुरे हैं। जैसे-जैसे बड़ा हुआ पता चला कि ये संस्कार हमारी आदतें हैं। जो हम रोजमर्रा की जिंदगी में करते हैं। यह सुनने को भी मिला कुछ संस्कार पूर्व जन्म से लेके आते हैं। मेरा मानना है जो है यही है। हम अपने संस्कार बदल सकते हैं प्रयास के द्वारा। इसे परिवर्तित करने के लिये हमें अपनी इच्छा शक्ति का प्रयोग करना चाहिए।

हमें सर्वप्रथम अपने गलत संस्कारों का पता लगाना होगा। अपना अवलोकन करके उसकी एक सूची बना लेनी चाहिए फिर उसे जरूरत के हिसाब से सजा लेना चाहिए। अब हमें इस सूची से एक संस्कार को लेके उसे कम से कम रोजाना अभ्यास करके अपनी जिंदगी में अपनाना है। ये सब संभव है। हमें पूरे लगन के साथ प्रयास करना है।

हमारे जैसे संस्कार होंगे हमारा जीवन भी वैसा ही होगा हमें अपने संस्कारों को बेहतर से बेहतर बनाना है, ताकि हमारा जीवन सुख व शांति से भर जाये। हम अपनी दिनचर्या में अच्छे संस्कार जैसे प्रातःकालीन भ्रमण, व्यायाम, सत्विचार, अच्छा व्यवहार, अपनाकर जीवन सुखमय कर सकते हैं।

आपने देखा होगा कि कुछ लोग अपने जीवन में अपना व्यवहार बदल लेते हैं। बहुत बोलने वाला या मजाक करने/ उड़ाने वाला अचानक शांत हो जाता है। बहुत चंचल आदमी स्थिर हो जाता है। ये सब लगातार प्रयास के द्वारा संभव है। या तो हम अपने गलत संस्कारों को अपने प्रयास के द्वारा बदल लेना नहीं तो फिर जिंदगी उस संस्कार को बदलने के लिये हमें मजबूर कर देगी। हमें वह समय आने से पहले अपने आप को जागरूक करना है और अपने बुरे संस्कार को जिंदगी से दूर करना है। ये एक दिन में नहीं होगा। हमें धैर्य के साथ प्रयास जारी रखना होगा। हम जिन आदतों को जितने दिन तक पकड़ के रखते हैं उसे छोड़ने में भी उतनी ही तकलीफ होती है। ये काम आसान नहीं है परन्तु असंभव भी नहीं है।

आदमी आदतों का ही स्वरूप है। आदत, हम अपना दैनिक कार्य जिस हिसाब से करते हैं, वैसे ही हो जाती है। अगर हमें अपनी आदत बदलनी है तो हमें अपना कार्य करने का अंदाज उसी तरीके का करना पड़ेगा जैसा हम बनना चाहते हैं। हम जो भी काम करते हैं उसकी छाप हमारे मष्तिस्क में पड़ जाती है। और वह हमारे स्मृति में जमा हो जाती है। अगली बार उस तरीके का काम करने के समय मन उस स्मृति से तरीका लेके कार्य सम्पादित करता है। इसलिए हमे वर्तमान में कार्य करने के तरीके को उच्चतम मापदण्ड के साथ करना चाहिए और दिन-प्रतिदिन उसमें सुधार के साथ आगे बढ़ना चाहिए।

अगर आप बेंजामिन फ्रेंकलिन की जीवनी पढ़ेंगे तो देखेंगे कि वह भी आदतों की एक सूची बना कर रखते थे और उसे अभ्यास के द्वारा अपने जीवन में अपना लेते थे। इसलिए अगर हमलोग दृढ़प्रतिज्ञ होके अगर कोई आदत बदलना चाहे तो ये सहज व संभव है।

हमें एक सुधारक पुस्तिका अपने पास रखना चाहिए। जिसमें अपना रोजमर्रा के कार्यकलाप का अवलोकन करके अपने आदतों पर विचार करके उसे अद्यतन करना है। उसे साप्ताहिक या मासिक समय पर अवलोकन करके बदलाव करते रहना चाहिए।

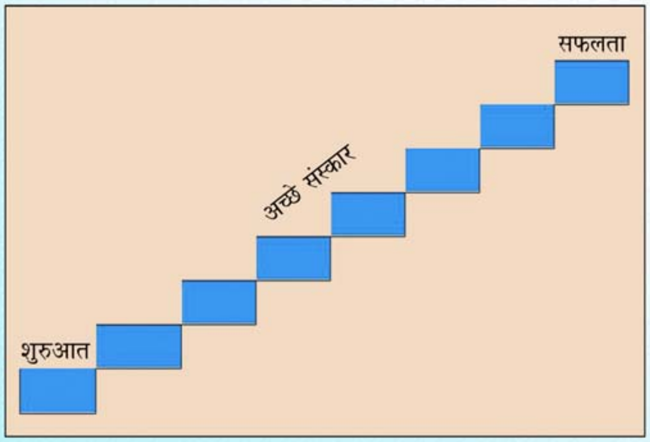

स्वास्थ्य पर निबंध

रमेश कुमार अग्रवाल
भूविज्ञान एव भंडारण विभाग

मनुष्य का स्वास्थ्य निसंदेह उसकी सबसे बड़ी पूंजी है क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ विचारों का वास होता है साथ ही कुछ कर गुजरने की इच्छा होती है स्वस्थ शरीर में ही खुशहाल मन होता है। मनुष्य की इच्छा न केवल स्वाथ्य न केवल अपने के लिए बल्कि परिवार, देश और समाज सभी के लिए अहमियत रखती है। इसलिए मनुष्य के स्वास्थ्य पर निश्चय ही चिंता का विषय है।

स्वास्थ्य से आशय सिर्फ रोगमुक्त होना ही नहीं बल्कि यह शरीर दिमाग और वातावरण धन की दृष्टि से भी ठीक होना है।

स्वस्थ रहना सबसे बड़ा सुख है कहावत भी है "पहला सुख निरोगी काया" कोई व्यक्ति तभी अपने जीवन का पूरा आनन्द उठा सकता है, जब वह शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहे।

अक्सर देखा जाता है कम उम्र में ही व्यक्ति न जाने कितनी बीमारियों से ग्रसित हो जाता है इसका कारण दूषित हवा, जल, ध्वनि, पर्यावरण और प्रदूषण है।

'वायु, जल, मिट्‌टी, पेड़-पौधे' मिलकर पर्यावरण बनाते हैं मनुष्य के आसपास का वातावरण घर के भीतर और बाहर सभी पर्यावरण का हिस्सा है। पृथ्वी में वायु पर्याप्त है जिसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वच्छ वायु में साँस लेकर ही हम स्वस्थ जीवन व्यतित करते हैं ऐसे में प्रदूषित वायु से मानव-जीवन अस्वस्थ हो जाता है फलस्वरूप खांसी, जुकाम से लेकर दमा जैसी आम बीमारियों से लेकर कैंसर जैसी घातक बीमारी की संभावना होती है।

फैक्ट्रियों और यातायात से होने वाले धुँए से साँस की बीमारियों का खतरा होता है जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले दूषित धुएं के लिए साधनों का विकास जरूरी है पेड़-पौधे वातावरण से 'कार्बन डाई ऑक्साइड खीचते हैं और बदले में 'ऑक्सीजन' देते हैं जो मानव जीवन स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है इसलिए बेहतर पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए वृक्षारोपण जरूरी है।

'जल' हमारे शरीर के स्वास्थ्य के लिए अहम है इसमें मौजूद किसी भी तरह के हानिकारक पदार्थ मे यह प्रदूषित हो जाता है और मनुष्य प्रदूषित पानी पीने से गले में संक्रमण, फेफड़े की बीमारी जैसे गंभीर रोगों की संभावना बढ़ जाती है।

जाहिर तौर पर स्वास्थ्य के लिए सफाई आवश्यक है। आधुनिक समाज में अति विकसित औद्योगिकरण ने स्वभाविक शांति भी भंग कर दी। औद्योगिकरण के शोर ने मानव जीवन पर भी बुरा प्रभाव डाला है इन सारे हालातों में मनुष्य के संतप्त मन का सीधा प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर पड़ता है और शरीर की सहनशक्ति कम होती है।

किसी महान व्यक्ति ने कहा है "उत्तम स्वास्थ्य वह अनमोल रत्न है जिसका मूल्य तब होता है जब वह उसे खो देता है"।

"स्वास्थ्य और व्यायाम' का भी एक दूसरे से घनिष्ठ सबंध है व्यक्ति के जीवन में नियमित दिनचर्या में प्रणायाम और योग का ना होना। इसे अपने जीवन में शामिल कर ले तो हमारा स्वास्थ्य बेहतर हो सकता है।

आजकल की भाग दौड़ की जिन्दगी में फुर्सत के दो पल भी नसीब नहीं होते। जिसके कारण शरीर तनाव, थकान जैसी बीमारी का घर बन जाता है। काम के साथ साथ स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना आवश्यक है "स्वास्थ्य ही धन है" यदि हम स्वस्थ ना रहे तो हर खुशी निरर्थक है स्वस्थ्य वही है जो मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से स्वस्थ है।

व्यायाम से शरीर को कई लाभ है, रक्त का संचार सुचारू रूप से होता है और शरीर को ऑक्सीजन मिलता है। जो मानव जीवन में शांति भी प्रदान करता है। योग गुरू बाबा रामदेव इसके उदाहरण हैं।

स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए हमारे माननीय प्रधानमंत्री 'श्री नरेन्द्र मोदी' जी ने 21 जून 2017 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाने का फैसला लिया।

जब मुझे पता चला तो मुझे बहुत खुशी हुई मैंने खुद योग एवं प्रणायाम के सकारात्मक असर को महसूस किया है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस स्वास्थ्य की दिशा में एक बहुत अच्छा कदम है।

हम सभी को बेहतर स्वास्थ्य के लिए योग का महत्व जानना होगा। इस तरह स्पष्ट है स्वास्थ्य एवं व्यायाम का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध है।

बेहतर स्वास्थ्य के लिए कई बातें है जो हमे जानना आवश्यक है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए दिनभर में लगभग 8 से 10 ग्लास पानी पीना, कच्चे फल एवं सब्जियों का प्रयोग, प्रतिदिन योग करें, राइडिंग या साइकिलिंग करें, दूध से बने पदार्थों का सेवन करें जो हमारे हड्डियों और दिमाग को मजबूत बनाता है और मानव जीवन और शरीर को स्वस्थ रखता है।

उपरोक्त उपायों को अपनाने वाला व्यक्ति हमेशा स्वस्थ बना रह सकता है क्यूंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास है।

एक महान स्वतंत्रता सेनानी, 'महात्मा गांधी' जिन्हें हम "बापू" भी कहते हैं उन्होंने कहा था "वह स्वास्थ्य ही है जो वास्तविक धन है, न कि सोने व चाँदी के सिक्के।"

* * *

मोहब्बत

सुश्री नयणमणि बरूवा
कनिष्ठ वैज्ञानिक
अनुसंधान एवं विकास विभाग

एक तेरा वजूद जो मेरे बाहर मौजूद है,
एक तेरा अक्स जो मेरे अंदर मौजूद है,
यह अक्सर मेरे जीने की वजह बन जाते हैं,
तू अगर साथ है,
तो मुझे मेरे जीने का मकसद याद है,
अगर तू नहीं,
तो इस जीवन का कोई मतलब नहीं,
मुझे हीर-रांझा की तरह मर कर प्यार को
अमर नहीं करना है,
मुझे तो अपनी जिन्दगी को खुल कर जीना है
अपने मोहब्बत के हसीन बाहों में
अपनी ख्वाबों को हकीकत में लाना है
बस मुझे उनसे मोहब्बत है
और ये आखिरी सांस तक निभाना है।

हमारी नन्ही सी मेहमान - पूसी (मैंगो)

अनिता निहालनी
पति - श्री एम. सी. निहालनी
अनुसंधान एवं विकास

अप्रैल माह का तीसरा सप्ताह था जब एक सुबह अचानक वह हमारे जीवन में आयी और मात्र साढ़े तीन महीनों के अल्पकाल में हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गयी। जिस तरह उसका आना एक विचित्र अंदाज में था उसका जाना भी इतना एकाएक हुआ कि हम उसे अंतिम विदाई भी न दे सके। स्पष्ट याद है उस दिन सुबह हम उठे तो रोज की तरह टहलने जाने के लिए निकले, गैराज से आती हुई एक आवाज कानों में सुनाई दी कुछ - कुछ बिल्ली की सी और कुछ चिड़िया की सी। पर जिसका स्रोत नजर नहीं आ रहा था। आखिर कार का बोनट खोलकर देखा सफेद और स्लेटी रोओं वाली एक छोटी सी बिल्ली वहाँ बैठी थी। पिछली रात शायद कहीं से आकर उसने वहाँ पनाह ली थी। गुलाबी नाक और बटन जैसी काली चमकदार आँखें... चेहरे पर कुछ डर के भाव थे। शुरू के दो-तीन दिन देखते ही छिप जाती थी, कटोरी में रखा दूध पहले अनछुआ रखा रहा फिर धीरे-धीरे पीने लगी। बाद के दिनों में दही उसे ज्यादा पसंद आती थी। शाम को हम उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में घी लगी रोटी देते, एकाध टुकड़ा खाकर छोड़ देती, उसे खेलने में ज्यादा आनन्द आता शेष भोजन चीटियाँ ही खातीं।

दिन भर गैराज में रहती और रात को कार में ही चढ़कर सोती थी। एक महीने बाद उसने सोने का एक सुरक्षित स्थान खोज लिया, बैठक की खिड़की की जाली और शीशे के बीच की पतली सी जगह पर वह घुसकर अक्सर सो जाती थी, इस प्रकार कमरे के भीतर भी देख सकती थी और हम भी सुबह उठते ही उसे वहीं देखते। वर्षों पूर्व हमारे पुराने घर में एक बिल्ली का बच्चा कार के टायर से टकरा कर मृत्यु को प्राप्त हुआ था, उस वक्त हमें बहुत दुख का अनुभव हुआ था, लगा शायद वही पुनः आ गया है, इस बात को मानने का एक कारण था कि सोती वह भले कार में थी पर कार स्टार्ट होने पर भाग कर काफी दूर चली जाती थी। कुछ ही दिनों में वह हिलमिल गयी और बगीचे में हमारे साथ-साथ घूमने लगी। पौधों के पीछे छिप जाती और हमें चौंकाती हुई घुटने तक चढ़कर भाग जाती। सुबह उठते ही हम देखते दरवाजे के पास ही बैठी वह पुकार रही है। बाहर निकलते ही पैरों से लिपटने लगती थी, खाने के लिए उसकी कटोरी में कुछ डालने से पहले वह अपनी आवाज में जाने क्या-क्या कह चुकी होती थी।

एक दिन एक छोटा सा सांप का बच्चा आया जिसके साथ वह बड़े मजे से खेलने लगी, किसी भी कीड़े को हिलते देखकर अथवा तो हवा में हिलते पत्ते या डाली को देखकर उछलकर उसके पास पहुंच जाना उसका प्रिय काम था। शिकारी की मुद्रा में बैठकर एक झपट्टे में वह अपने लक्ष्य तक पहुँचती और हम उसे देखकर मुस्कुराते। हमें किस बात में खुशी मिलती है यह भी वह जान गयी थी। बरामदे में रखी कुर्सी पर चढ़कर बैठना उसे बहुत भाता था। दोपहर को कभी पाँवदान पर अथवा तो कभी कुशन पर मस्ती से चारों पैर फैलाकर सोती थी तो देखने लायक दृश्य होता था, कभी-कभी लगता जैसे कोई नन्हा बच्चा एक हाथ सिर पर रखे चैन की नींद में सो रहा है।

हमारे पुत्र को बचपन से ही बिल्लियों से प्रेम रहा है, उसे बताया तो बहुत खुश हुआ, उसने बताया अपनी अगली यात्रा में वह उसके साथ खेल सकेगा। जब वह घर आया तो उसके लिए दफ्ती का सुंदर घर बनाया और उसके साथ खेलने के लिए रिबन व रस्सियों की सहायता से दो साधन भी बनाये, जिनके साथ खेलते हुए दोनों को समान आनंद आता था। वह पूसी के लिए विशेष भोजन के दो पैकेट लाया था, उसके भोजन में भागीदार और भी जीव थे, दो मैना पक्षी जो शोर मचाते हुए उसे डराने का प्रयत्न करते और उसकी कटोरी से खाने लगते, रात को घूमते हुए एक स्नेल भी आ जाता और कुछ चीटियाँ भी। वापस जाकर पुत्र ने बंगलुरू से उसके लिए एक स्प्रे भी भेजा जिसका प्रयोग मात्र तीन-चार बार ही हो सका। उधर छोटी भांजी भी विदेश से अपनी एक सखी के साथ आने वाली थी। वह भी अपने साथ बिल्लियों का भोजन लायी, जिसे वह बहुत रूचि से खाती थी। उन्होंने आने पर उसे

अपना साथी पाया और उसकी कितनी ही तस्वीरे उतारीं, जब वे बगीचे में बैठतीं तो धीरे से उनके निकट आकर बैठ जाती अथवा तो उनके ऊपर चढ़ जाती। उन्होंने उसे व्यक्तिवाचक नाम भी दिया, मैंगो, धीमी सी आवाज में उसे पुकारने पर वह दौड़ती हुई आ जाती थी।

एक बार सब्जी बाड़ी से बिल्लियों के लड़ने की आवाज सुनकर मैंने देखा तो एक बड़ी मोटी सी बिल्ली उससे लड़ते हुए धमका रही थी, वह किसी तरह बचकर वापस आई तो बहुत डरी हुई थी। उस दिन उसने कुछ खाया भी नहीं और एक ही स्थान पर बैठी रही। एक बार देखा वह लंगड़ा कर चल रही थी, देखा तो उसके एक पैर पर चोट का निशान था, दिन में दो बार पकड़ कर दवा लगाई, अगले दिन देखा तो वह पहले की भांति उछल रही थी। उसकी गतिविधियों का वर्णन करने बैठूं तो पन्ने भर जायेंगे, कैसे वह पेड़ों पर चढ़ जाती थी, कैसे हरी घास में छुप कर तथा कैसे वह एक ही क्षण में बगीचे के इस किनारे से उस किनारे तक पहुंच जाती थी। खरगोश से भी तेज गति से दौड़ती और ऊंची छलांग लगाकर वह हमें आश्चर्य में डाल देती थी।

इतने अल्पकाल का साथ और वह नन्हा सा जीव हमारे मनों में कितनी गहरी छाप छोड़ गया है। उसे भुला पाना असम्भव है। जिस क्षण उसने अंतिम श्वास ली, हम उसके निकट नहीं थे। रात के भोजन के बाद जब टहलने गये तो रोज की भांति वह नजर नहीं आयी। सोचा शायद शिकार के लिए कहीं चली गयी होगी, तब कहाँ ज्ञात था कि शाम को ही घर के बाहर किसी वाहन से टकराकर वह किसी और दुनिया में चली गयी थी, जहाँ से कोई वापस नहीं आता। उसी क्षण हम बाहर गये सड़क के उस पार घास के बिछौने पर अपनी चिर-परिचित मुद्रा में सोयी थी, उसे हिलाया पर अब वहाँ सन्नाटा था। भरे मन से उसके नन्हे से तन को समाधि दी, अभी उसकी उम्र कितनी कम थी और नियति ने उसे उठा लिया शायद उसे अगला जन्म उच्च योनि में देने के लिए। अब न ही सुबह उठते ही उसकी पुकार सुनायी देती है और न ही बगीचे में उसकी मनमोहक मुद्राएँ ही नजर आती हैं। इस पीड़ा को शब्दों में कह देना सरल नहीं है। उसने इस थोड़े से समय में हमें जो निस्वार्थ प्रेम से नहला दिया शायद वही अश्रु बनकर बरस रहा है, किन्तु यही पीड़ा पुनः प्रेम में बदल कर उसकी स्मृतियों को जीवित रखने में सहायक भी तो बन रही हैं।

* * *

हार-जीत

कमलेश अग्रवाल
उपमहाप्रबंधक (प्रशासन)
निगमित कार्यालय, नोएडा

उलझने हैं बहुत..... सुलझा लिया करता हूँ,
फोटो खिचवाते वक्त मैं अक्सर....
मुस्कुरा लिया करता हूँ।

क्यूँ नुमाइश करूँ मैं अपने माथे पर शिकन की,
मैं अक्सर मुस्कुरा के इन्हें... मिटा दिया करता हूँ।

क्योंकि जब लड़ना है खुद को खुद ही से....
हार-जीत में इसलिए कोई फर्क नहीं रखता हूँ।

हारुं या जीतूं कोई रंज नहीं
कभी खुद को जिता देता हूँ
कभी खुद से जीत जाता हूँ।।

योग और स्वास्थ्य

सुश्री नयणमणि बरूवा
अनुसंधान एवं विकास विभाग

योग शब्द संस्कृत धातु 'युज' से निकला है, जिसका मतलब है व्यक्तिगत चेतना या आत्मा का सार्वभौमिक चेतना या रूह से मिलन। योग, भारतीय ज्ञान की पांच हजार वर्ष पुरानी शैली है। योग की पद्धतियां इस रूप से गठित हुई है कि वे न सिर्फ शरीर के अलग अलग अंगो की ताकत को बनाए रखती है बल्कि उन्हें बढ़ाती भी है। जिससे किसी भी व्यक्ति को स्वस्थ और रोगमुक्त जीवन जीने को मिलता है। रोजाना योगासन करने से न सिर्फ शरीर चुस्त-दुरूस्त रहता है बल्कि रोजाना के जीवन के अलग अलग कारणों से होने वाले शारीरिक, मानसिक और भावात्मक असंतुलन का भी निरोध होता है।

योग करने के विधि और फायदेः हम सभी अपने बड़ों से सुना है कि इलाज करने से बेहतर है बचाव। आजकल काम काज के बोझ, रहन-सहन और खाने पीने की चीजों में की जानेवाली मिलावट के कारण अनेक तरह की बीमारियां पैदा हो गई है। इन बीमारियों से बचने का उपाय है –

1. हेल्दी फूड - घर पर बना सादा भोजन खाएं और जंक फूड को स्वाद लेने तक ही सीमित करें। आर्गेनिक रूप से उगाए गए फल और सब्जियां खाएँ।
2. योग - योग एक प्रकार की उपचारात्मक क्रिया है जो शरीर, मन और मस्तिष्क तीनों को सही तरह से काम करने की ऊर्जा देती है। इससे हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

योग करने के नियम :

योगासन का पूरा लाभ लेने के लिए –

- योग हमेशा खाली पेट करें। योग करने से तुरंत पहले या बाद में कुछ नहीं खाना चाहिए।
- योगासन करते हुए सांस नाक से लेनी चाहिए न कि मुँह से। सांस नाक से लेकर मुँह से छोड़ी जाती है।
- योग - प्राणायाम सदैव स्वच्छ और खुले स्थान पर-करना चाहिए।

योग के फायदे :

- योग प्राणायाम से फेफड़ों में अधिक ऑक्सीजन पहुंचती है और हम वायु जनित बीमारियों से बचे रहते हैं।
- शरीर लचीला बनता है और दर्द की शिकायत नहीं रहती है।
- मानसिक तनाव, चिंता और अवसाद से मुक्ति मिलती है।
- योग करते हुए शरीर के सभी अंग काम करते हैं। जिससे पूरा शरीर और हर अंग मजबूत होता है।
- रक्त संचार अच्छा हो जाता है, जिससे ब्लड प्रेशर और डायबिटीज जैसी बीमारियों का सामना नहीं करना पड़ता है।
- पाचन तंत्र से जुड़ी सभी बीमारियां खत्म हो जाती हैं और खाए हुए भोजन से सभी पोषक तत्व शरीर को मिलने लगते हैं।

वजन घटाना हो या फिर बढ़ाना हो, योग दोनों कामों में आपकी मदद करता है।

- दिमागी काम करनेवाले व्यक्तियों को योग करने से मानसिक आराम और शांति मिलती है।
- कमजोर याददश्त, भूलने की बीमारी और आल्जाइमर में योग करने से लाभ मिलता है।
- योग किया जाए तो इम्यून सिस्टम मजबूत होता है, जिससे बदलते मौसम का शरीर पर असर कम होता है।
- गंभीर बीमारियों के इलाज में भी योग असरदार औषधि की तरह काम करता है।
- आंख, त्वचा और बालों के लिए योग क्रिया लाभदायक है।

योग ज्ञान हम "Art of living" से या किसी योग गुरू से सीख सकते हैं। योग एक धर्म नहीं है। यह एक विज्ञान है, सलामती का विज्ञान, यौवन का विज्ञान, शरीर, मन और आत्मा को एकीकृत करने का विज्ञान है।

मासूमियत के युग पर लौटें

डॉ रंजन कुमार भगवती
अनुसंधान वरिष्ठ वैज्ञानिक
अनुसंधान एवं विकास विभाग

छायादार हरे रंग की अपनी जाल में,
अपनी आजादी के प्रतीकात्मक पर्वत
श्रृंखला को घेरता है
फिर भी,
राक्षसी क्रिकेट कीड़े उनके कर्कभौमी में व्यस्त हैं
जैसे कि इस चुप घाटी की विशिष्टता को मनाते हुए
एक गहरे नीले समुद्र के बीच में
एक बच्चे की लोरी के समान
फिर भी,
निर्माता की प्रशंसा में सूर्य जलता है
ऐसा एक निर्माता जो लंबे समय से
हरे रंग की कंबल में खो गया है
चमकदार सफेद सांप,
ऐसी पहचान की रक्षा करें
जो चकाचियों और अंतिम सर्वोच्चता की
तलाश में खो गई है
आत्मा दर्पण
अंतिम निर्णय दिवस की भविष्यवाणी करते हैं
इस सुंदर दुनिया के लिए,
जिसमें हम रहते हैं,
सत्य के दिन को दर्शाते हैं
आइए हम मासूमियत के युग में वापस चले जाएं,
इससे पहले की वह आकाशीय घोड़े की सवारी पर
अपने दिव्य तलवार के स्वाद से हमें परिचित कराएं।

बहुत कुछ

श्री डी. बी. खड़का
अग्नि शमन विभाग

बहुत कुछ सीखा मैंने
ज्ञान यहाँ कुछ पाया,
कभी हँसा भी, कभी रोया भी
कभी खुशी के गीत गाया।

बहुत गम है मुझे
मेरे भाई मेरे यार,
हृदय में रहोगे सदा आप
दिल में रहेगा आपका प्यार।

बहुत कुछ कहने को था मगर
अन्दर से निकाल नहीं पा रहा हूँ,
आप लोगों के बीच से आज
अलविदा होकर जा रहा हूँ।

खुश थे भाई मेरे तब
वो जमाना ही कुछ और था,
दु:खी हैं भाई मेरे सब
आजका जमाना ही कुछ और है।

(उपरोक्त पंक्तियाँ अपने फेयर वेल के मौके पर 31 जनवरी 2017 को लेखक के द्वारा प्रस्तुत)

आज हम किस राह पर

नारद प्रसाद उपाध्याय
भूविज्ञान एवं भंडारण विभाग

इस धरती पर जीव श्रेष्ठ
कहलाता है मानव
पर, कमी है मानवता की
कहलाता है ज्ञानी
पर कमी है ज्ञान की
कहता है धर्म शास्त्र का अध्ययन है
पर कमी है धार्मिक ज्ञान की
आज हम किस राह पर.....।

> " खुद पर
> काबू पा लेना ही
> मनुष्य की
> सबसे महत्वपूर्ण
> जीत होती है "
> – प्लेटो

जब-जब इस धरती पर
हुआ है अत्याचार नारी के ऊपर
आया है प्रलय धरती पर
सीता के अपहरण से ही
हुई ध्वंस लंका
जलकर राख हुई सोने की लंका
रावण जैसा वीर
ज्ञानी, पण्डित की हुई मृत्यु
अमृतकुण्ड प्राप्त के बावजूद।

कौरव वंश ध्वंस हुआ
धरती रक्त रंजित हुई
द्रौपदी के चीर हरण के कारण
तथापि, मानव में ज्ञान नहीं है
आज, मानव किस राह पर.....।

शून्य है यह धरती
यहाँ नारी के बिना
यह जानकर भी –
अत्याचार हो रहा है नारी के ऊपर
नारी का हो रहा है अपरहण, बलात्कार
किन्तु, कब तक .....
और, कितने दिनों तक
क्या, इस धरती पर प्रलय
जब तक न आए.....?
आज हम किस राह पर.....

नया सवेरा

बिरेन्द्र गोतामे
परियोजना अभियंता
परियोजना विभाग

कल वो दिन था,
आज ये दिन है।

कल होठों पे हँसी थी
आज जबान पे चुप्पी है।।

खेतों में कल हरियाली थी,
जमीं आज खलिहान है।
कल फिजाँ में चमन था
आज हवा में बारूद है।

क्यूँ कैसे ये सब हुआ!
और इंसान बेबस हुआ!

शायद
आदमी अधिक हो गया,
शैतान हवा हो गया।
आसमान से लाली खो गयी
जमीं से ईमान डोल गया,
आदमी इंसान को खा गया
जानवर डर से भाग गया।

लगता है –
आने वाले क्षणों में,
जमीन को आसमान निगल जायेगा।
चारों तरफ त्रासदी मच जायेगी,
सिर्फ केवल शून्य रह जायेगा।।

फिर लाखों बरस लगेंगे,
पौधे उग आयेंगे।
हवा की सृष्टी होगी
पानी की बृष्टी होगी।

फिर से किसी मनु का अविष्कार होगा।
वही जीवन का सूत्रधार होगा
इंतजार है उसी क्षण का
शायद मैं नहीं तो क्या,
इंसान तो कोई होगा।

> क्रोध को पाले
> रखना गर्म कोयले को
> किसी और पर
> फेंकने की नीयत से
> पकड़े रहने के
> सामान है; इसमे
> आप ही जलते है!!
>
> – गौतम बुद्ध

बाजार ने दी हिंदी को मजबूती

अनुपम त्रिवेदी

हाल ही में हिंदी दिवस मना। सरकारी स्तर पर एक कर्मकांड के तौर पर कई कार्यक्रम हुए। हिंदी के प्रचार-प्रसार की नई योजनाएं बनी। ज्यादातर जगहों पर हिंदी की मातम-पुरसी हुई। लोगों ने हिंदी की दशा का रोना रोया। साल-दर-साल यही हो रहा है। एक लीक पीटी जा रही है। पर यह उचित नहीं है। सच में अब समय आ गया है कि हिंदी की मातम-पुरसी करने के बजाए हम हिंदी का अभिनंदन करें। सरकारी उपेक्षा, दुर्दशा, पब्लिक स्कूलों के दुश्चक्र और अंग्रेजी को थोपने के अनेक प्रयासों के बावजूद हिंदी न केवल फल-फूल रही है, बल्कि दिन-दूनी, रात-चौगुनी, बढ़ रही है।

यह हिंदी की समृद्ध विरासत, अन्य भाषाओं व बोलियों के शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता और सार्वभौमिक स्वीकार्यता का ही परिणाम है, कि आज हिंदी बिना किसी सरकारी घोषणा के व्यावहारिक तौर पर भारत की राष्ट्रभाषा बन गई है (संविधान में राज-भाषा का दर्जा है, राष्ट्र-भाषा का नहीं) सुदूर उत्तर में कारगिल और लेह-लद्दाख से लेकर दक्षिण में कन्याकुमारी, पूर्व में ईटानगर से लेकर पश्चिम में पोरबंदर तक, लक्षद्वीप से लेकर अंडमान तक सभी जगह हिंदी व्यापक स्तर पर बोली और समझी जा रही है।

अभी कुछ समय पहले की बात है, जब मध्य-भारत से आगे बढ़ने पर हिंदी को स्वीकार्यता पर संदेह होता था। दक्षिण भारत में तो हिंदीभाषी के लिए मुश्किल होना अपरिहार्य था। माना जाता था कि दक्षिण में अंग्रेजी के बिना काम नहीं चलेगा। पर अब यह सब कल की बात हो गई है, पूरे दक्षिण भारत में हिंदी व्यापक तौर पर बोली और समझी जाती है। कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना में हिंदी, तेलुगु और कन्नड़ के बाद दूसरी सबसे ज्यादा बोली-समझी जानेवाली भाषा है। तमिलनाडु और केरल में लगभग हर जगह हिंदी का सहज व्यवहार हो रहा है।

साठ के दशक के हिंदी-विरोध से उपजे द्रमुक नेता करुणानिधि भले ही अब भी हिंदी में न बोलते हों, तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता आवश्यकता पड़ने पर धारा-प्रवाह हिंदी में बोलती हैं। तमिलनाडु में हिंदी सीखनेवालों की तादाद भी लगातार बढ़ रही है। गांधी जी द्वारा 1918 में स्थापित दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा आज एक महत्वपूर्ण संस्था बन गई है। इसके द्वारा चलाए जा रहे हिंदी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित होने वाले छात्रों की संख्या जो 2009 में 62,684 थी, 2013 में बढ़ कर 4,36,860 हो गई। यह तमिलनाडु में हिंदी की बढ़ती स्वीकार्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

भारत के पूर्वोत्तर में भी हिंदी बोलना अब उतना ही सहज है जितनी मुंबई या बेंगलुरु में। न केवल देश में, हिंदी फिल्मों और हिंदी के चर्चित टीवी कार्यक्रमों की वजह से पूरी दुनिया में हिंदी का डंका बज रहा है। अमरीका से लेकर, चीन तक कई विश्व-विद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। बड़ी संख्या में चीनी छात्र हिंदी सीखने भारत आ रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक ऐसी कल्पना करना भी मुश्किल था। इंटरनेट के प्रादुर्भाव से तो इसमें और इजाफा हुआ है। नेट पर हिंदी सिखानेवाली वेबसाइटों की बाढ़ आ गई है। आनलाइन हिंदी सिखानेवालों की दुनिया भर में मांग बढ़ गई है।

विश्व भर में हिंदीभाषी लोगों की तादाद बढ़ रही है। नेपाल, दक्षिण अफ्रिका, मारीशस, युगांडा, फिजी, सिंगापुर और खाड़ी देशों में बड़ी संख्या में हिंदी भाषी हैं। दुबई जैसे शहरों में तो आज हिंदी बोलचाल की भाषा बन गई है। अमरीका, इंगलैंड के कई शहरों में, एयरपोर्ट और रेस्तरां में आप हिंदी में बात कर सकते हैं। अजरबैजान, उज्बेकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, ताजिकिस्तान, अफगानिस्तान आदि में तो हिंदी गानों और फिल्मों की धूम है।

दरअसल, हिंदी का प्रचार अपने आप ही हो रहा है। सरकार कुछ करे या न करे, हिंदी स्वतः ही बढ़ रही है। हिंदी के इस विस्तार का मूल कारण उसका समावेशी स्वरूप है। आज सही मायनों में हिंदी भाषा की गंगा बन गई है। कभी सिर्फ खड़ी बोली के तौर पर जानी जानेवाली संस्कृतनिष्ठ

शब्दों से पूरित हिंदी आज देश की लगभग सभी भाषाओं और विदेशी भाषाओं से भी शब्दों को लेकर आत्मसात कर समृद्ध हो गई है। भोजपुरी, मैथिली, मगही, बृज और अवधी जैसी समृद्ध भाषाओं और बोलियों के संगम ने इसे जन-जन की भाषा बना दिया है। आज हिंदी ज्यादा आधुनिक, विपुल शब्द-संपदा से भरपूर व बेहतर अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। रही सही कसर पूरी कर दी है, हिंदी फिल्मों और टीवी चैनलों के लोकप्रिय कार्यक्रमों ने, जिन्होंने हिंदी को दुनिया भर में लोगों के घरों में पहुंचा दिया।

हिंदी मीडिया का भी हिंदी के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान है। आज हिंदी अखबारों और पत्रिकाओं की हिंदी अनौपचारिक, सीधी, लोगों के सरोकार और भावनाओं से तारतम्य बिठानेवाली भाषा बन गई है। स्थानीय बोलियों लोक-साहित्य का भरपूर इस्तेमाल कर हिंदी को एक जन-भाषा, एक लोक-भाषा का स्वरुप दे दिया गया है। साथ ही इसको बड़ा समर्थन मिला है। सोशल मीडिया से जिस हिंदी की ताकत को तकनीक से जोड़ा और परिणाम स्वरूप फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप्प जैसे माध्यमों में हिंदी के प्रयोग में विस्फोटक वृद्धि हुई। माइक्रोसाफ्ट और गूगल जैसे कंपनियों ने हिंदी की इस ताकत को तो काफी पहले ही पहचान लिया था।

दरअसल, नब्बे के दशक में बाजार के खुलने के साथ ही हिंदी का भी व्यापक रूप से प्रचार हुआ। पूरे भारत में हिंदी ने एक संपर्क भाषा के रूप में स्वयं को मजबूती से स्थापित किया। आज चेन्नई, बेंगलुरु और त्रिवेंद्रम में न सिर्फ टैक्सी और होटलवाले हिंदी समझते और बोलते हैं, बल्कि अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठान भी हिंदी को अपना रहे हैं। सूचना-प्रौद्योगिकी ने भी इसमें बड़ी भूमिका निभाई है। उत्तर के लाखों नौजवान दक्षिण के विभिन्न शहरों में हैं। फलस्वरूप आज चेन्नई, बेंगलुरु, पुणे या हैदराबाद में हिंदी में काम चलाना ज्यादा आसान हुआ है।

कह सकते हैं कि हिंदी का भविष्य अब सुरक्षित है। भारत जैसे बड़े बाजार में उपभोक्ताओं से संपर्क करने के लिए हिंदी एक महत्वपूर्ण कड़ी है। इसलिए कोई कुछ करे या न करे, यह बाजार ही हिंदी की प्रासंगिकता को बनाए रखेगा।

(लेखक राजनीतिक-आर्थिक विश्लेषक हैं)

साभार : दैनिक पूर्वोदय

* * *

व्यथा

विश्व भूषण सिंह
लॉजिस्टिक्स विभाग

डूबता रहा, उतरता रहा
तुम्हें क्या क्या मैं समझता रहा
गहराई में न उतरा कभी
उथला तुम्हें समझता रहा।

क्या करूं, नादान हूँ
तेरा हीं निर्माण हूँ
जवाब ही सवाल हैं
हैरान हूँ, हैरान हूँ।

नहीं तेरा आकार है
ब्रह्माण्ड के तू पार है
क्षितिज की आंखों से झांकती
लगता हर पल मुझे आँकती।

मोक्ष की नहीं आस है
बस एक हाथ की तलाश है
गार्दिशों में मैं यहाँ
तू कहाँ, तू है कहाँ।

हिंदी को सहज और सरल बनाने का आसान तरीका

विश्वनाथ त्रिपाठी

हिंदी सहज और सरल होनी चाहिए, लेकिन सहजता का मतलब आसान नहीं उसे स्वाभाविक होना चाहिए। हिंदी को सहज-सरल बनाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि भाषा व्याकरण सम्मत होनी चाहिए। इसमें बोलचाल का सहज लहजा होना चाहिए।

जैसे हम अगर राजमहल को राजमहल लिखेंगे तो इसे सहज ही माना जाएगा और राज अट्टालिका लिखेंगे तो असहज हो जाएगा। इसके लिए हमें उर्दू को आदर्श मानना चाहिए। उर्दू में वाक्यों के गठन का बहुत ध्यान रखा जाता है।

हिंदी में वाक्य गठन का ध्यान कम रखा जाता है। मशहूर शायर फिराक गोरखपुरी ने अपनी एक रचना में सीख देते हुए कहा है कि पूरी शुद्ध क्रियाएं लिखिए, शब्दों का क्रम रखिए ठीक।

हिंदी वालों को लिखते हुए इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि लेखन में तद्भव, देशी शब्दों का प्रयोग ज्यादा करें और तत्सम शब्दों का प्रयोग कम करें। साथ ही हिंदी लेखन में बोलियों के शब्दों का प्रयोग भी करें। जैसे भोजपुरी, बुंदेलखंडी, अवधी आदि का प्रयोग भी करना चाहिए। उसमें अंग्रेजी वाक्यों के गठन का प्रयोग कम से कम हो। मुख्य रूप से जिस भाषा से अनुवाद कर रहे हैं, उस भाषा का सटीक ज्ञान भी होना चाहिए।

अनुवाद हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रवृत्ति के अनुसार होना चाहिए। भाषा अभिव्यक्ति के लिए होती है। वह अभिव्यक्ति का साधन होती है, इतराने या चमत्कृत करने का साधन नहीं है।

लेखन में मुंशी प्रेमचंद, शिवपूजन सहाय, हजारीप्रसाद द्विवेदी और डॉ. रामविलास शर्मा के साहित्य को आदर्श मानना चाहिए। जब हम लिखते हैं तो भाषा प्रसंग के अनुकूल होती है। लेखन में सिर्फ सुझाव दिए जा सकते हैं, नियमों से नहीं बांधा जा सकता क्योंकि लेखन तो सजीव होता है, लेखक को ही नियम का फैसला करना पड़ता है।

साभार : प्रातः खबर

* * *

संघर्ष का सौंदर्य

लघुकथा

मिट्टी ने मटके से पूछा, मैं भी मिट्टी, तू भी मिट्टी, परंतु पानी मुझे बहा ले जाता है और तुम पानी को अपने में समा लेते हो। वह तुम्हें गला भी नहीं पाता, ऐसा क्यों ?

मटका हंसकर बोला, यह सच है कि तू भी मिट्टी है और मैं भी मिट्टी हूं। पर मेरा संघर्ष अलग है। पहले मैं पानी में भीगा, पैरों से गूंथा गया, फिर चाक पर चला कुम्हार के, थापी की चोट, आग की तपन को झेला। संघर्ष झेलकर, पानी को अपने में रखने की ताकत मैंने पायी।

मंदिर की सीढ़ियों पर जड़े पत्थर ने मूर्ति के पत्थर से पूछा, भाई, तू भी पत्थर, मैं भी पत्थर पर, लोग तुम्हारी पूजा करते हैं और मुझे पैरों से रौंदकर, बिना ध्यान दिये चलते हैं। ऐसा क्यों ?

मूर्ति के पत्थर ने उत्तर दिया, क्या तू मेरे संघर्ष को जानता है ? मैंने इस शरीर पर कितनी छैनियों के प्रहार सहे हैं, मुझे कई बार घिसा गया है, मार और संघर्ष की पीड़ा को सहकर ही मैं इस रूप में आया हूं। संघर्षों की भट्टी में तपकर ही जीवन स्वर्ण बनता है।

प्रस्तुति : श्रीकांत कुलश्रेष्ठ

साभार : प्रातः खबर

या इलाही ये माजरा क्या है?

सूर्यबाला

बाहर कार का हॉर्न बजा और कुछ भद्र महिलाएं उतरकर अंदर आती दिखी। मैंने स्वागत में हाथ जोड़े और पूछा, कहिये कैसे आयीं?

उन्होंने लगभग एक साथ उत्तर दिया, हम अपना स्त्री-विमर्श करवाने आयी हैं।

मैं बुरी तरह चकरायी, क्या कहा आपने?

वही कि हमें अपना स्त्री-विमर्श करवाना है।

मैंने लगभग हकलाते हुए कहा, देखिए स्त्री-विमर्श किया जाता है, करवाया नहीं जाता लेकिन ये बैठे बिठाये आप लोगों को स्त्री-विमर्श करवाने की क्या सूझी ?

वे हुमक गयीं, आपको नहीं करना है तो मत करिए, साफ-साफ कह दो, हम किसी और से करवा लेंगे बहाने मारने की जरूरत नहीं, हम इज्जतदार घरों की महिलाएं हैं, खुद कोई काम करने की न आदत, न इजाजत, न टाइम ही।

खुद ही अपना स्त्री-विमर्श करेंगे तो दुनिया हंसेगी कि देखो डाइमंड-टावर वालियों को, अब यह नौबत को आ गयी कि अपने आप अपना स्त्री-विमर्श, साफ था कि वे तुली बैठी थी और मैं, या इलाही ये माजरा क्या है के बीच खब्त नरमी से समझाया, देखिए मेरा मतलब यह जानना था कि आखिर क्या वजह है जो आप लोग स्त्री-विमर्श के लिए कमर कस के निकल पड़ीं, इस काम के लिए अब वे भी नरम पड़ीं।

खुलासा करते हुए बोली, वजह कुछ खास नहीं, जैसा कि आपको बताया, हम लोग खाते-पीते इज्जतदार घरों से हैं। भगवान का दिया सब कुछ है। सारी सुख-सुविधाएं, ऐशो आराम सिवाय स्त्री-विमर्श के। उसी की कमी रह गयी है तो सोचा आप पढ़ी-लिखी हैं, लेखिका भी हैं, आपके यहां से कराना अच्छा रहेगा लेकिन जब आप लोग सुकून की जिंदगी बसर कर रही हैं तो स्त्री-विमर्श के पचड़े में क्यों पड़ रही हैं ?

वो आपसे कहा न कि हम बड़े घरों की स्त्रियां हैं तो पढ़ी-लिखी इलीट सोसाइटी की लेडीज के बीच में उठना-बैठना चाहती हैं लेकिन हमसे कहा गया कि उन लोगों के साथ उठने-बैठने की पहली शर्त स्त्री-विमर्श है। बिना स्त्री-विमर्श के आप उनके बीच पूरी तरह अनफिट रहेंगी तो सोचा, ठीक है, जैसे फेशियल करवाते हैं, पैडीक्योर, मैनीक्योर करवाते हैं, वैसे ही स्त्री-विमर्श भी करवा लेंगे, और उन लोगों के बीच उठ बैठ लेंगे।

समझ गयी, बस इतनी-सी बात, अरे ये तो आप लोग बेहद आसानी से वे उत्साहित होकर बताने लगीं, हमने सोशल वर्क भी काफी किये हैं।

कई बार औरतों, बच्चों को सिलाई मशीनें, पाउडर मिल्क, स्कूल बैग और किताबें भी बांटी हैं। हमारे फोटो भी लोकल अखबारों में छपे हैं लेकिन हर बार हमसे यही कहा गया कि खाली सिलाई मशीनें बांटने से काम नहीं चलेगा। इसके पीछे सॉलिड मकसद होना चाहिए, स्त्री-विमर्श टाइप।

ओह! स्त्रियों के लिए आपके दिलों में इतनी करूणा है तो बस अपनी-अपनी गाड़ियां निका-लिए और पास के गाँव, कस्बों की दुःखियारी स्त्रियों, बूढ़ियों और बच्चियों की दुनिया से शुरू कीजिए।

उनके दुख-सुख, तकलीफों और लाचारियों को जानिए। उनकी उम्मीदों और सपनों को सच करने में लग जाइए। सच की भारतीय स्त्री तो वहीं बसती हैं और आपके पास तो साधन भी हैं, कुछ करने का जज्बा भी।

लेकिन उनका चेहरा उतरता चला गया, अरे, आपने तो खासे झमेले में डाल दिया। हम हरिभजन को आये थे, आप कपास ओटाने लगी। कहना आसान है, गांवों में जाइए, कभी गयी हैं आप गांवों में ? कानो सुनी और आंखों देखी में जमीन-आसमान का अंतर होता है। इतना कूड़ा-कचरा, गड्ढे गड़हियों से पटी सड़क कि टायर पंचर हो जाये। बदबू इतनी कि नाक फट जाये, आपने भी कहां ला पटका हमने तो सुना था, लाइब्रेरियों में हो जाता है स्त्री-विमर्श, व्याख्यान, वक्तव्यों से भी उस कैटेग्री की कुछ पढ़े-लिखों वाली तरकीबें

सुझाइए-आप स्वयं स्त्री हैं, लेखिका भी, यह सब करती ही रहती होंगी।

सच पूछिए तो, मैं तो अब तक अपने अंदर वाली स्त्री का विमर्श कर ही नहीं पायी। अरे ? उन्होंने अचम्भे से आंखें झपकायीं, देखने में तो पढ़ी-लिखी और मॉडर्न लगती हैं आप, मैंने उसी कातर भाव से कहा, फुर्सत ही नहीं मिली न! उन्होंने आग्नेय नेत्रों से मुझे घूरते हुए कहा, खैर फुर्सत न मिलना तो एक बहाना है लेकिन अगर सचमुच नहीं किया तो आपने समाज और समूची स्त्री-जाति के प्रति धोखा किया है।

देखिए मुझे गलत मत समझिए, मेरा काम है लिखना, स्त्री पर भी मैंने बहुत लिखा है। कभी अवसर आया तो आप जैसी पर भी लिख सकती हूं, उन्होंने फिक से मुंह बनाया, उससे क्या बनेगा ?

मैंने कहा, बनेगी न एक पूरी, मुकम्मल स्त्री। उनका चेहरा एकदम से चमका, फिर बुझ गया लेकिन ऐसी स्त्री का हम क्या करेंगे, जिसका विमर्श ही न हुआ हो।

साभार : प्रातः खबर

* * *

बहरी बीवी

खलील जिब्रान

अनुवाद - बलराम अग्रवाल

एक रईस था। उसकी एक जवान बीवी थी, जो पूरी तरह बहरी थी।

एक सुबह, जब वे नाश्ता कर रहे थे, बीवी ने कहा, कल मैं बाजार गई थी। वहां दमाकस की सिल्की पोशाकें, भारत के परदे, फारस के नेकलेस और यमन के ब्रेसलेट्स की नुमाइश लगी थी। लगता है कि कोई कारवां इन चीजों को हमारे शहर में लाया है।

जरा मेरी ओर देखो। कहने को तो मैं एक बड़े आदमी की बीवी हूं लेकिन हूं फटेहाल। मुझे उन कीमती चीजों में से कुछ चाहिए।

कॉफी पीते हुए पति ने कहा, बेगम, क्या तुम्हें कभी रोका है ? तुम बाजार जाओ और जो चाहिए खरीद लाओ।

बहरी बोली, नहीं! तुम हमेशा नहीं, नहीं ही बोलते हो। क्या मुझे अपने रिश्तेदारों और तुम्हारे मेहमानों के बीच इस खस्ताहाल में जाना-आना चाहिए?

पति ने कहा, मैंने ना नहीं कहा। तुम दौड़कर बाजार जाओ, खूबसूरत से खूबसूरत ज्वेलरी की खरीदारी करो और वापस अपने शहर लौट आओ।

लेकिन बीवी ने उसकी बातों का फिर गलत मतलब निकाला और बोली, जितने भी रईस हैं, उनमें सबसे ज्यादा कंजूस तुम हो। मुझ पर फबने वाली तुम हर चीज को मना कर देते हो जबकि मेरी उम्र की दूसरी औरतें बन-ठन कर शहर के पार्कों में घूमती हैं। यों कहकर उसने रोना शुरू कर दिया। आंखों से निकलकर उसके आंसू उसकी छातियों पर गिरने लगे। वह चीखने-चिल्लाने लगी, मैं जब भी कोई कपड़ा-गहना मांगती हूं, आप नहीं, नहीं बोलने लगते हैं।

तब पति उठा। अपने पर्स में से उसने मुट्ठी भरकर सोने के सिक्के निकाले और उसके सामने रख दिए। वह बोला, बाजार जाओ मेरी जान, और जो चाहो खरीद लाओ।

उस दिन के बाद, उसकी बहरी बीवी को जब भी कुछ चाहिए होता, वह आंखों से मोती टपकाती उसके सामने जा खड़ी होती। और वह बिना कुछ बोले मुट्ठीभर सोने के सिक्के उसकी झोली में डाल देता।

अब, होता यह है कि जवान औरतें जो ऐसे नौजवानों के प्यार की गिरफ्त में है, लम्बे समय तक टिक जाती हैं। और जब भी वह अपना हाथ खींचता है, वे कोपभवन में जाकर टसुए बहाना शुरू कर देती हैं।

बीवी को टसुए बहाता देख वह मन में सोचता है, जरूर कोई नया कारवां शहर में आया है और मुहल्ले में जरूर कुछ सिल्की पोशाकें और ज्वेलरी दिखाई दे गई हैं।

वह जाता है, मुट्ठीभर सोने के सिक्के लाता है और बीवी की गोद में डाल देता है।

साभार : प्रातः खबर

ठाकुर का कुआँ

प्रेमचंद

जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आई। गंगी से बोला-यह कैसा पानी है ? मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सड़ा पानी पिलाए देती है !

गंगी प्रतिदिन शाम को पानी भर लिया करती थी। कुआँ दूर था, बार-बार जाना मुश्किल था। कल वह पानी लायी, तो उसमें बू बिलकुल न थी; आज पानी से बदबू कैसी ! लोटा नाक से लगाया, तो सचमुच बदबू थी। जरूर कोई जानवर कुएँ में गिरकर मर गया होगा; मगर दूसरा पानी आवे कहां से ?

ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा ? दूर से लोग डाँट बताएँगे। साहू का कुआँ गांव के उस सिरे पर है, परन्तु वहां भी कौन पानी भरने देगा ? कोई कुआँ गांव में है नहीं।

जोखू कई दिन से बीमार है। कुछ देर तक तो प्यास रोके चुप पड़ा रहा, फिर बोला - अब तो मारे प्यास के रहा नहीं जाता। ला, थोड़ा पानी नाक बंद करके पी लूं।

गंगी ने पानी न दिया। खराब पानी पीने से बीमारी बढ़ जायेगी - इतना जानती थी; परन्तु यह न जानती थी कि पानी को उबाल देने से उसकी खराबी जाती रहती है। बोली - यह पानी कैसे पियोगे? न जाने कौन जानवर मरा है ? कुएँ से मैं दूसरा पानी लाए देती हूँ।

जोखू ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा - दूसरा पानी कहाँ से लाएगी ?

'ठाकुर और साहू के दो कुएँ तो हैं। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे ?

'हाथ-पाँव तुड़वा आएगी और कुछ न होगा। बैठ चुपके से। ब्राह्मण-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहूजी एक के पाँच लेंगे। गरीबी का दर्द कौन समझता है। हम तो मर भी जाते हैं, तो कोई दुआर पर झाँकने नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएँ से पानी भरने देंगे?"

इन शब्दों में कड़वा सत्य था। गंगी क्या जवाब देती; किन्तु उसने वह बदबूदार पानी पीने को न दिया।

रात के नौ बजे थे। थके-मांदे मजदूर तो सो चुके थे, ठाकुर के दरवाजे पर दस-पाँच बेफिक्रे जमा थे। मैदानी बहादुरी का तो न अब जमाना रहा है, न मौका। कानूनी बहादुरी की बातें हो रही थीं। कितनी होशियारी से ठाकुर ने थानेदार को एक खास मुकदमे में रिश्वत दे दी और साफ निकल गये। कितनी अक्लमंदी से एक मार्के के मुकदमे की नकल ले आए। नाजिर और मोहतिमिम, सभी कहते थे, नकल नहीं मिल सकती। कोई पचास मांगता, कोई सौ। यहाँ बे पैसे-कौड़ी नकल उड़ा दी। काम करने का ढंग चाहिए।

इसी समय गंगी कुएँ से पानी लेने पहुंची।

कुप्पी की धुंधली रोशनी कुएं पर आ रही थी। गंगी जगत की आड़ में बैठी मौके का इन्तजार करने लगी। इस कुएँ का पानी सारा गाँव पीता है। किसी के लिए रोक नहीं; सिर्फ ये बदनसीब नहीं भर सकते।

गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मजबूरियों पर चोटें करने लगा - हम क्यों नीच हैं और ये लोग क्यों ऊँच हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहाँ तो जितने हैं, एक-से-एक छटे हैं । चोरी ये करें, जाल-फरेब ये करें, झूठे मुकदमे ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद को मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहूजी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजूरी देते नानी मरती है। किस-किस बात में हैं हमसे ऊँचे ? हाँ, मुंह से हमसे ऊँचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे ! कभी गाँव में आ जाती हूं, तो रस-भरी आँख से देखने लगते हैं। जैसे सबकी छाती पर साँप लोटने लगता है, परन्तु घमण्ड यह कि हम ऊँचे हैं!

कुएँ पर किसी के आने की आहट हुई। गंगी की छाती धक्-धक् करने लगी। कहीं देख ले तो गजब हो जाये। एक

लात भी तो नीचे न पड़े। उसने घड़ा और रस्सी उठा ली और झुककर चलती हुई। एक वृक्ष के अंधेरे साए में जा खड़ी हुई। कब इन लोगों को दया आती है किसी पर ! बेचारे महँगू को इतना मारा कि महीनों लहू थूकता रहा। इसीलिए तो कि उसने बेगार न दी थी ! इस पर ये लोग ऊँचे बनते हैं ?

कुएँ पर दो स्त्रियाँ पानी भरने आयी थी। इनमें बातें हो रही थीं।

'खाना खाने चले और हुक्म हुया कि ताजा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं है।'

'हम लोगों को आराम से बैठे देखकर जैसे मरदों को जलन होती है।'

'हां, यह तो न हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस, हुकुम चला दिया कि ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडियां ही तो हैं!'

'लौंडिया नहीं तो और क्या हो तुम ? रोटी-कपड़ा नहीं पातीं ? दस-पाँच रुपये भी छीन-झपटकर ले ही लेती हो। और लौंडियां कैसी होती है !'

'मत लजाओ, दीदी ! झिन-भर आराम करने को जी तरसकर रह जाता है। इतना काम किसी दूसरे के घर कर देती, तो इससे कहीं आराम से रहती। ऊपर से वह एहसान मानता। यहाँ काम करते-करते मर जाओ, पर किसी ताक मुंह ही सीधा नहीं होता।'

दोनों पानी भरकर चली गईं, तो गंगी वृक्ष की छाया से निकली और कुएँ के जगत के पास आयी। बेफिक्रे चले गये थे। ठाकुर भी दरवाजा बन्द कर अन्दर आँगन में सोने जा रहे थे। गंगी ने क्षणिक सुख की साँस ली। किसी तरह मैदान तो साफ हुआ। अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी जमाने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानी के साथ और समझ-बूझकर न गया होगा। गंगी दबे पाँव कुएँ के जगत पर चढ़ी। विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ।

उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला। दाएँ-बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा, जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सुराख कर रहा हो। अगर इस समय वह पकड़ ली गई, तो फिर उसके लिए माफी या रियायत की रत्तीभर उम्मीद नहीं। अन्त में देवताओं को याद करके उसने कलेजा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया।

घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। जरा भी आवाज न हुई गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएँ के मुँह तक आ पहुँचा। कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेजी से उसे न खींच सकता था।

गंगी झुकी कि घड़े को पकड़कर जगत पर रखे कि एकाएक ठाकुर साहब का दरवाजा खुल गया। शेर का मुँह इससे अधिक भयानक न होगा !

गंगी के हाथ से रस्सी छूट गई। रस्सी के साथ घड़ा धड़ाम से पानी में गिरा और कई क्षण तक पानी में हलकोरे की आवाजें सुनाई देती रहीं।

ठाकुर 'कौन है, कौन है ?' पुकारते हुए कुएँ की तरफ जा रहे थे और गंगी जगत से कूदकर भागी जा रही थी।

घर पहुंचकर देखा कि जोखू लोटा मुँह से लगाए वही मैला गंदा पानी पी रहा है।

बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ

सुमि रॉय
पति - श्री गौतम कुमार रॉय
सामग्री विकास

शिक्षा अधिकार सिखाती है,
अधिकार आत्मविश्वास जगाता है।
औरत की भूमिका, बेटी, बहू, पत्नी, माँ भी है,
"माँ" से होती है नये ज्ञान की शुरूआत
"माँ" होती है ज्ञान का भण्डार।
एक शिक्षित "माँ" ही है रखती,
सही ज्ञान की बुनियाद।
शिक्षा है सचेतनता,
एक नई सोच का आधार।
शिक्षा है नये ज्ञान का प्रकाश,
"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ"
यही है नया हमारा आगाज।।

हिंदी की बहुत प्रगति हुई है

बी. डी. अगरवाल
अवकाशप्राप्त न्यायाधीश

इस आलेख का शीर्षक देख सभी हिंदी प्रेमी सवाल उठाएंगे और मुझे इस बात के लिए कोसेंगे कि राष्ट्रभाषा हिंदी का अपमान हुआ है। तथ्य तो यह है कि सिर्फ अप्रवासी भारतीय बल्कि अधिसंख्यक भारतीय नागरिकों ने भी मातृभाषा हिंदी के इस विकृत संस्करण को स्वीकार कर लिया है।

भारतवर्ष को विवधता में एकता और वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत के लिए विश्व में जाना जाता है। सच कहूं तो भारतीय संविधान में सचमुच इस सिद्धांत का पालन किया है। इसने सभी धर्म, जाति, जनजातियों और भाषाओं को बिना भेदभाव के मान्यता और सम्मान दिया है। वह विविधता संस्कृति, भाषा व खानपान की आदतों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अलग-अलग रूपों में विभिन्न अनुष्ठानों के निजी नियमों और रीति रिवाजों पर भी आधारित है। भारत अपनी विशिष्ट स्थालाकृति के कारण होनेवाले विविध मौसम के लिए भी धन्य है। देश के आधे हिस्से में हिमालय की पर्वत श्रृंखला से ठंडी हवा बहती रहती है तो शेष हिस्सों को अरब सागर, हिंद महासागर और बंगाल की खाड़ी से सुखद हवा मिलती रहती है।

विभिन्न घोटालों के बावजूद देश के लोग एकजुट रहते हैं। हम इन घोटालों को राज्य, धर्म, राजनीतिक मान्यता अथवा धर्म के आधार पर नहीं आंकते हैं। सरकारी आवंटन के मामले में हुए घोटालों के अलावा हाल ही में एक नए घोटाले की बात सामने आई है। हमने देखा है कि कुछ राज्यों में औसत से कम योग्यता के विद्यार्थियों को मेरिट सूची के शीर्ष पर स्थान दिया गया है। स्नातक डिग्री ले चुके शिक्षकों का सामान्य ज्ञान एकदम घटिया स्तर का है और वे आसान शब्दों का भी सही उच्चारण नहीं कर पाते हैं। यह बीमारी किसी खास एक राज्य अथवा एक खास विषय अथवा खास साहित्य के साथ ही सीमित नहीं है। हिंदी भी इस भ्रष्ट व्यवस्था का शिकार हुई है।

संविधान की अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी देवनागरी लिपि में देश की आधिकारिक भाषा है। अनुच्छेद 345 से 347 तक राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं को गोद लेने का प्रवाधान है। अनुच्छेद 344 के तहत हिंदी भाषा के आधिकारिक प्रयोग की देखरेख तथा अन्य बातों के लिए राष्ट्रपति को एक आयोग के गठन का अधिकार दिया गया है। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के प्रसार को बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार के लिए प्रावधान है।

उक्त संवैधानिक दायित्वों के अनुसरण में भारत सरकार ने कई कमेटियों और विभागों का गठन किया है। सन 1960 के 1 मार्च को इसी के तहत केंद्रीय हिंदी निदेशालय का गठन किया गया था। इसके गठन के बाद से निदेशालय हिंदी के प्रसार-प्रचार और विकास के लिए कई योजनाओं को लागू करता रहा है। हिंदी को अक्षरशः राष्ट्रीय भाषा के रूप में लागू करने के लिए राजभाषा अधिनियम कानून के नाम से लंबे समय पहले सन 1963 में विशेष कानून लाया गया था। केंद्र सरकार हर साल हिंदी के प्रसार में करोड़ों रुपए खर्च करती है। विभिन्न विभाग और एजेंसियों के अलावा तमाम गैर-सरकारी संगठनों को भी विभिन्न योजनाओं के तहत हिंदी के प्रचार-प्रसार के नाम पर आर्थिक सहायता दी जाती है। एक प्रमुख एनजीओ है राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा। देश की आजादी तथा संविधान बनने से काफी पहले हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकृति के लिए सन 1936 में महात्मा गांधी ने इसका गठन किया था। विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों के आयोजन के जरिए यह संस्था हिंदी को मातृभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए समर्पित है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि हिंदी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिल गया है। पूरे देश में हर क्षेत्र के लोगों को हिंदी में बोलचाल करने में कोई हिचक और न ही कोई कठिनाई है। हमारे राष्ट्रीय नेता भी अंतर्राष्ट्रीय मंच पर हिंदी में बोलने में

गर्व महसूस करते हैं। हाल ही में केंद्रीय मंत्री ऊमा भारती ने हिंदी सलाहकार समिति के साथ हुई एक बैठक में कहा कि जिस समाज को अपनी भाषा पर गर्व नहीं है वह मेरूदंड विहीन है।

हिंदी को लेकर एक जमीनी हकीकत यह भी है कि आम जिंदगी की बोलचाल में हम जिस हिंदी का प्रयोग करते हैं, उसे संविधान के प्रणेताओं ने कतई महसूस नहीं किया था। बोलचाल की हिंदी में अंग्रेजी शब्दों का भरपूर प्रयोग तथा व्याकरण की गलतियों के साथ इसे विकृत कर दिया गया है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि सरकारी व्यवस्था भी पूरे देश में राजभाषा को इसकी उपयुक्त गरिमा देने के लिए कोशिश तो कर रही है पर हिंदी के विकृत रूप को सुधारने में पहल नहीं कर रही।

हिंदी के विकृत रूप को अगर सुधारा नहीं गया तो निश्चित तौर पर इसका प्रभाव साहित्य में भी दिखने लगेगा। मैं केंद्र सरकार से हिंदी भाषा को सही ढंग से बनाए रखने के लिए शुद्ध हिंदी बोलने संबंधी एक आंदोलन शुरू करने का सुझाव देना चाहता हूं। अगर इस ओर अभी ध्यान नहीं दिया गया तो वो दिन दूर नहीं जब अंतर्राष्ट्रीय मंच पर विकृत हिंदी को मान्यता नहीं दी जाएगी।

अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद : संजीव कलिता

साभार : दैनिक पूर्वोदय

जिंदगी

सोनाली बाल्मिकी
कक्षा : बारहवीं (ए)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

छोटी सी जिंदगी है,
हर बात में खुश रहो
जो चेहरा पास ना हो,
उसकी आवाज में खुश रहो,
कोई रूठा हो तुमसे,
उसके इस अंदाज में भी खुश रहो,
जो लौट के नहीं आने वाले,
उन लम्हों की याद में खुश रहो
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहो,
खुशियों का इंतजार किसलिए,
दूसरों की मुस्कान में खुश रहो,
क्यूँ तड़पते हो हर पल किसी के साथ को,
कभी तो अपने आप में खुश रहो,
छोटी सी जिंदगी है,
हर हाल में खुश रहो।

बाजार से बढ़ेगा हिंदी का रुतबा

विभूति नारायण राय

एक विश्वविद्यालय से छात्रों के सामने हिंदी दिवस पर बोलने का अनुरोध आया और विषय दिया गया हिंदी का भविष्य ? थोड़ा धक्का लगा, क्योंकि आम तौर से भविष्य के साथ प्रश्नचिह्न तभी लगाते हैं, जब आपके मन में उसे लेकर संशय हो। तो क्या संविधान में राजभाषा घोषित होने के 60-65 साल बाद ही ऐसी नौबत आ गई कि हिंदी प्रेमियों के मन में उसके भविष्य को लेकर चिंता पैदा होने लगी है ? मेरे मन में हिंदी के भविष्य को लेकर कोई संशय नहीं है, पर इसका कारण यह मत समझो कि अचानक सरकार उसको लेकर अधिक गंभीर हो गई है या हिंदी समाज ने अपनी भाषा को ज्यादा सम्मान देना शुरू कर दिया है। आज भी, जब तक मजबूर न हो जाए, नौकरशाही अंग्रेजी में ही काम करना पसंद करती है और सरकारी दफ्तर दिनोंदिन घटते जा रहे उत्साह के साथ हर साल कर्मकांड की तरह हिंदी-पखवाड़ा मानते हैं। आज भी हिंदी प्रदेशों में लोग अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में शिक्षा दिलाना पसंद करते हैं, क्योंकि यह भाषा अभिजात्य और रोजगार की कुंजी है। फिर मैं क्यों हिंदी के भविष्य को लेकर आश्वस्त हूं ? इसके कारणों को खंगालना दिलचस्प होगा।

आधुनिक अर्थों में आज हम जिसे हिंदी कहते हैं, वह लगभग दो-ढाई सौ वर्ष पहले विकसित हुई थी और सौ से कुछ ही वर्ष पहले तक उसे खड़ी बोली कहते थे। बोली से भाषा तक की यह यात्रा बड़े रोचक मोड़ों से गुजरी है। आधुनिक हिंदी के पहले बड़े रचनाकार भारतेंदु हरिश्चंद्र मानते थे कि खड़ी बोली में कविता नहीं लिखी जा सकती। वह गद्य खड़ी बोली और पद्य बृजभाषा में लिखते थे। और हिंदी की उन्नति के लिए १९वीं शताब्दी में बनी और इस क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण योगदान करने वाली संस्था काशी नागरी प्रचारिणी सभा ने खड़ी बोली समर्थकों के बड़े जद्दोजहद के बाद लगभग अनिच्छा से खड़ी बोली में भी कविता करने की अनुमति दी थी। एक बार शुरुआत हो जाने के बाद खड़ी बोली ही आधुनिक कविता का माध्यम बनी। ऐसा इसलिय संभव हो सका कि बृज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही या अंगिका, बज्जिका समेत तमाम बोलियों के मुकाबले खड़ी बोली ज्यादा आधुनिक, विपुल शब्द-संपदा से भरपूर और बेहतर अभिव्यक्ति का माध्यम थी। कविता का माध्यम बनने के दो-तीन दशकों के भीतर ही इसके मानकीकृत स्वरूप को हिंदी कहा जाने लगा।

मेरा मानना है कि हिंदी का प्रारंभिक दौर ही उदारता और अनुदारता के बीच संघर्ष का दौर था। पहला इम्तिहान तो यह था कि नई बनी भाषा के साहित्य में क्या सिर्फ खड़ी बोली के साहित्य का शुमार होगा ? अवधी, बृज या मैथिली जैसी बोलियों की परंपरा को काटने के बाद हमारे पास बचता क्या ? यह अकादमिक प्रश्न था और आचार्य रामचंद्र शुक्ल जैसे विद्वानों ने हिंदी साहित्य का इतिहास लिखते समय या विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम बनाने के क्रम में इसका उत्तर दे दिया। सारी बोलियां हिंदी थीं और उन सबका साहित्य हिंदी का था। आज भी ये बोलियां हिंदी के लिए खाद का काम कर रही हैं।

दूसरा प्रश्न थोड़ा जटिल था और उसका समाधान होने में भी लगभग सौ वर्ष लगे। हिंदी अपनी जड़ें संस्कृत में तलाशेगी या फिर लोक में प्रचलित अरबी, फारसी, पुर्तगाली, फ्रेंच और द्रविड़ भाषाओं के शब्द भी उसके शब्दकोश के अंग बनेंगे ? प्रश्न काफी हद तक सांप्रदायिक था और भारतीय समाज के कटु यथार्थ से जुड़ा था। खास तौर से देश के विभाजन की परिस्थितियों से यह और जटिल हो गया। शुरू में तो शुद्धतावादियों को बढ़त मिलती सी लगी। आजादी के फौरन बाद बने पारिभाषिक शब्द या आकाशवाणी के समाचारों में प्रयुक्त भाषा इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं।

लगभग अरुचि उत्पन्न करने वाली तथा दुरूह शब्दों से भरी इनकी भाषा कभी जनता को स्वीकार्य नहीं हुई और लोग इनका उपयोग सिर्फ लतीफे गढ़ने के लिए करते रहे।

जैसे-जैसे उदारता हमारे लोकतंत्र का अंग बनती गई, भाषा भी लोक के करीब गई। पिछड़ों, दलितों, स्त्रियों जैसे हाशिये पर सिमटे लोगों की राजसत्ता में भागीदारी बढ़ने के साथ ही यह भी तय हो गया कि जन सामान्य के बीच बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही होगी। सहज भाषा ने दो दिख सकने वाले चमत्कार किए - साक्षरता की दर में तेज वृद्धि संभव हो सकी और हिंदी अखबार दुनिया में सबसे बड़ी पाठक संख्या वाले अखबार बने। वर्धा हिंदी शब्दकोश पर काम करते समय हमने पाया कि व्यवहार में आने वाले शब्दों में अधिकांश की व्युत्पत्ति का स्रोत संस्कृत नहीं था।

हिंदी के भविष्य में मुझे बाजार की भी बड़ी भूमिका लगती है। भारत पिछले कुछ वर्षों में एक बड़ा बाजार बनकर उभरा है। यहां का मध्यवर्ग अपनी आबादी के लिहाज से यूरोप से भी बड़ा है। दुनिया भर की बहुराष्ट्रीय कंपनियां महानगरों से भी परे छोटे शहरों और कस्बों में फैले बाजारों तक अपनी पहुंच बनाने की कोशिश कर रही हैं। इस बाजार के उपभोक्ताओं से संपर्क करने के लिए किसी एक भारतीय भाषा का जानना हमेशा मददगार होगा। स्वाभाविक रूप से यह भाषा हिंदी हो सकती है, क्योंकि आधे भारत की यह मातृभाषा है और शेष भारत के अधिकांश हिस्से में इसे बोलकर अपना काम चलाया जा सकता है।

महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति के रूप में मुझे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि विदेशी छात्रों को हिंदी सिखाने के हमारे कार्यक्रमों में सबसे अधिक संख्या में चीनी छात्र भाग लेते थे। भारत और चीन पिछले दशकों से किसी भी अर्थ में अच्छे पड़ोसी के रूप में नहीं रह रहे हैं, फिर भी क्या कारण है कि हिंदी भाषा सीखने में चीनियों की इतनी अधिक दिलचस्पी है ? न सिर्फ वर्धा, बल्कि दिल्ली, वाराणसी और जयपुर जैसे शहरों में भी बड़ी संख्या में चीनी छात्रों को हिंदी सीखते हुए पाया जा सकता है। कुछ वर्षों पूर्व चीन की अपनी यात्रा के दौरान मैंने वहां के आधा दर्जन से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी का पठन-पाठन होते देखा था।

चीन में हिंदी सीखने का बढ़ रहा उत्साह किसी शून्य से नहीं उपजा है। दरअसल, चीन हर काम बहुत सी सुचिंतित और सुनियोजित तरीके से करता है। हिंदी को लेकर भी कुछ ऐसा ही मामला है। चीन की नजर इस बढ़ते बाजार पर है और इसलिए वह बड़ी संख्या में ऐसे नौजवान तैयार कर रहा है, जो हिंदी जानते हों, और जिनकी मदद से भारतीय बाजारों में उसकी कमाई हो सके। बाजार का प्रभाव भारतीय संदर्भ में भी देख सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के चलते लाखों की संख्या में भारतीय नौजवान देश के विभिन्न शहरों में गए हैं और फलस्वरूप आज चेन्नई, बेंगलुरु, पुणे या हैदराबाद में हिंदी में काम चलाना ज्यादा आसान हुआ है।

मेरा मानना है कि हिंदी के भविष्य का प्रश्न भविष्य की हिंदी के स्वरुप से जुड़ा है। यदि भविष्य में भी हिंदी का स्वरुप समावेशी बना रहा और उसने दूसरी भाषाओं या बोलियों को आत्मसात करने की अपनी क्षमता बरकरार रखी, तो उसके लिए कोई खतरा नहीं है। सरकारी समर्थन कम होने के बाद भी बाजार की जरूरतें उसे प्रासंगिक बनाए रखेंगी।

(लेखक महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति/ आइपीएस अधिकारी रहे हैं।)

विभूति नारायण राय

साभार - दैनिक पूर्वोदय

" विश्वास को सदैव तर्क से तौलना चाहिए,
जब विश्वास अंधा हो जाता है तो तर्क मर जाता है "
– महात्मा गांधी

एक विनती

युवराज सोनार
कक्षा : अष्टम
केन्द्रीय विद्यालय, दुलियाजान

सच्चाई की राह पर चलने वालों
आगे बढ़, पीछे मत पलट।
कुछ नहीं है मुड़ने वालों के लिए इस जग में,
राह तेरी सही है तो बढ़ता चल,
गलत पथ पर चलने से अच्छा है, तू थम जा
कुछ नहीं मिलने वाला है, उस रूख पर तुझे।
हे! मानव थम जा।
वक्त थमा नहीं है,
राह दिखलाएगा, सफलता दिलवाएगा।
बस चलता चल सच्चाई भरे पथ पर,
धैर्य धर, उधम मत कर, दोष ढूँढना छोड़ दें,
छिपे अच्छाईयत को परख,
सच्चाई तेरे चारों ओर है,
अपने देखने के नजरिये को बदल।
मेहनत कर चमक उठेगी किस्मत,
आलस्य त्याग कर, उद्यमता को अपना,
सज्जन आशावादी, उदार और विवेकता हो सपना,
हे! मानव, दानवता को त्याग कर, बढ़ता चल।
रुक मत, मंजिल नजदीक है।
सदैव मनुजता के धर्म को जागृत कर,
घबरा मत ईश्वरीय शक्ति पर विश्वास कर,
विद्वत्ता से विपत्ति को दूर कर,
हे! मानव विनती यह सुनकर,
सच्चाई की राह पर बढ़ता चल!!

चाहत

अभिनंद थापा
कक्षा : सप्तम (ए)
सेंटजेवियर्स स्कूल, दुलियाजान

वेदना ही वेदना के आघात ने
संवेदना सी जगा दी है हृदय में,
सोचता रहा विचारता रहा
कोसता रहा खुद को ही अनजाने में
प्रश्नों से घिरा वह राही
तलाशता रहा राह
भाग्य और किस्मत से जूझता रहा
शान्ति की तलाश में निकलता रहा वो
अशान्ति के प्रलय तले फिर भी दबा पड़ा वह पंथी
उनमुक्त महसूस करता
चिड़ियों की मधुराग और पुष्पों की महक से
रहस्य भरी आत्मा के
चिरने की क्षमता रखता जो
परमात्मा के आस्था में ही रहता वो
बंधनो को तोड़ उड़ने के चाह में पंथी वो
वृक्षों के सानिध्य में रहना चाहता है जो
गंगा यमुना के पवित्रता में तैरना चाहता नहीं,
पवित्र तो माँ के अश्रु से भी हो सकते हैं
इस कोलाहल से भरी संसार को छोड़
अब वह मनुष्यता के पथ पर चलना चाहता है।

उतार फेंक दो

काव्यता थापा
कक्षा : बारहवीं (ए)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

अब और न सह पाऊँगी मैं
क्या तुम्हें दया नहीं आती?
या फिर मेरी पीड़ा से अनजान हो तुम?
लेकिन यह तो तुम्हें भी पता है और मुझे भी
कि हजारों मुखौटो के पीछे
छिपे अपने दानवता भरी सच्चाई को
बढ़ावा दे रहे हो तुम
हाँ, कहा तो है शेक्सपीयेर ने
"कि द वर्लड इज ए स्टेज"
किंतु इस खेल-खेल भरी राह में
मेरे अस्तित्व को ही नाटक सा बना दिया है, तुमने,
क्या, कठपुतली हूँ मैं तुम्हारी
हाँ! इनकार करोगे तुम इस बात को
लेकिन तुम्हारी छिपी अहम भरी हाँ को भी,
महसूस कर सकती हूँ मैं
तुम पूजा करते हो मेरी
कभी लक्ष्मी तो कभी जगत जननी मैं तुम्हारी
कभी बेटी, बहू, माँ तो कभी अर्धांगिनी मैं तुम्हारी
लेकिन इस चिंता भरे ढोंग को त्याग दो
जब पुरूषों में उत्तम राम और बलवान पाँच पांडव
समझ न पाये सीता और द्रोपदी की वेदना
तो, हे तुच्छ मानव! मैं क्या उम्मीद रखूँ तुमसे?
अपने इस मुखौटे को उतार फेंक दो
अब और न सह पाऊँगी मैं।।

पछतावा

प्रीती कुमारी गुप्ता
कक्षा : बारहवीं (ए)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

चारों ओर पढ़ाई का साया है,
सारे पेपर में जीरो आया है।

हम तो यूँ ही चल देते हैं।
बिना मुँह धोए एग्जाम देने
और दोस्त है कहते
खूब पढ़ कर आया है।

ना जरूरत रखो सितारों की
ना ख्वाईस रखो फालतू यारों की।

बस एक दोस्त रखो हमारे जैसा
जो वाट लगादे हजारों की।

कह दो पढ़ने वालों से
कभी हम भी पढ़ा करते थे।

जितना सिलेबस पढ़कर
जो टॉप किया करते थे
उतना सिलेबस तो हम
छोड़ दिया करते थे।

धरती माँ की पुकार

रत्नेश यादव
कक्षा : बारहवीं (बी)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

हे मानव तुम जरा करो विचार,
करो न प्रकृति पर अत्याचार।
दूषित करो न निर्मल जल, स्थल को,
न करो रंगहीन, माँ के हरे भरे आँचल को
उनका हम पर कितना उपकार,
हे मानव तुम जरा करो विचार,
करो न प्रकृति पर अत्याचार।
सदियों से लिया हम सब का भार,
सहा हमेशा हम सब की भार,
कभी न किया पलट कर वार,
दिया हमेशा सुखों का भण्डार,
हे मानव तुम जरा करो विचार
करो न प्रकृति पर अत्याचार।
काट रहे हैं हम वृक्ष लगातार,
कभी न सोचा भविष्य का हाल,
होगा क्या, स्वच्छ पानी हवा बिन,
मचेगी जब हर घर में हाहाकार,
हे मानव तुम जरा करो विचार,
करो न प्रकृति पर अत्याचार।
होंगे प्रदूषण से लोग बेहाल,
होगा सभी का जब बुरा हाल,
बिमारियाँ करेंगी हम पर राज,
फिर क्या करेगी हमारी सरकार,
हे मानव तुम जरा करो विचार,
बंद करो, प्रकृति पर करना अत्याचार।

धरती पानी आकाश

निशा बाल्मीकी
कक्षा : बारहवीं (ए)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

धरती पानी आकाश और ये वन उपवन,
है कितना सुन्दर ये जीवन।
कलियाँ खिलती भौरे गुनगुनाते,
धरती की गोद में देखो
कितने सारे खेत है लहराते।।
देख के सुन्दर पक्षी उनको,
फिर अपने मधुर गीत गुनगुनाते।
ये सुन्दर नदियों का बहना,
बनता है धरती का गहना।
आता है ये हमको रास,
जैसे कोई अपना हो खास।
इसके बिना तो कुछ नहीं मुमकिन,
जैसे कोई पतंगा ज्वाला बिन।
ये सुन्दर नदियों का मिलना,
ये सुबह के सूरज का उगना।
बनाता है अपनी अनोखी छाप,
जैसे कोई बात हो खास।
धरती पानी आकाश और वन .....।।

अब चलता हूँ मैं

शोभा सोनार
कक्षा : बारहवीं (ए)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

चलता हूँ मैं फुरसत मिले तो याद कर लेना मुझे,
इन हवा के झोंके और मिट्टी की खुशबू में महसूस कर लेना मुझे
समय मिले तो चिट्ठियाँ लिखा करूँगा तुझे,
मेरे धूप और बरसात में रहने की चिंता मत करना
अगर चिट्ठी लिख न पाया तो
मुँह - फूलाकर कोने में रोते मत रहना।
अगली बार तेरे लिए चूड़ियाँ लेकर आऊँगा,
हाँ, वही नीले रंगो वाली,
लेकिन ध्यान होगा तुझे माँ और पिता का
रो मत रे पगली! तेरा भाई एक सिपाही है,
आँसू पोंछ ले और बिदा कर हँसते-हँसते मुझे,
सीमा पर गोलियाँ चलने की खबर आए तो, तू डरना मत
वीर गति प्राप्त हो गया तेरा भाई बस समझ लेना,
समझ लेना आधी ऋण हैं मैने चुका दी,
यह मत पूछना कि किसकी,
एक सिपाही की बहन होने के नाते याद रखना तू
भूल न जाना भारत माता के ऋणों को तू
ऋण तो चुक गये, पर आधे
बाकी है फिर भी माता-पिता के
अब तू ही चेष्ठा करेगी इसे पूर्ण करने की
रो मत रे पगली
अब चलता हूँ..... मैं।

मुहि

मो० आलम
कक्षा : बारहवीं (बी)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

हिन्दु मुसलीम भाई - भाई।
अपने में क्यों करे लड़ाई।।

साथ रहेंगे साथ जीएंगे।
एक पल भी हम न बिछड़ेंगे।।

न हिन्दुस्तान न पाकिस्तान।
सबका है सिर्फ एक इमान।।

आओ भाइयों हाथ मिलालो।
सब के साथ गले लगालो।।

आओ सब हम कसम खाएं।
अपने देश का भविष्य बचाएं।।

आओ मिल जुल कर साथ रहें।
एक दूसरे को अपनी दिल की बात कहें।।

हिन्दु - मुसलीम भाई-भाई।
अपने में क्यों करे लड़ाई।।

हम न है हिन्दु न है मुसलमान।
सबका है एक ही भगवान।।

खिलती कलियाँ

संजित ठाकुर
कक्षा : बारहवीं (बी)
ऑयल इंडिया उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
दुलियाजान

रंग बिरंगी खिलती कलियाँ,
गूंजे भँवरे उड़ती तितलियाँ।
सूर्य किरणे अब फैल गई,
कलियों का घूंघट खोल गई।
कली-कली को देख रही,
देख देख कर हँस रही।
मस्त पवन का झोका आया,
मीठे सुर में गीत सुनाया।
डाली-डाली लगी लहराने,
क्या मस्ती भी लगी छाने,
देख-देख मन लुभाया
कली-कली का मन इतराया।
कितनी कलिया एक बगीचा,
माली ने सब को है सींचा।
सींच - सींच कर बड़ा किया,
कलियों ने मन हर लिया,
ए माली मत हाथ लगाना,
कुम्हला न जाएँ इन्हें बचाना
कली को फूल बदलते देखो
महकते फूलों की फुलवारी देखो।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा ऑयल नोएडा कार्यालय का निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति की पहली उपसमिति द्वारा ऑयल नोएडा कार्यालय का निरीक्षण 24.01.2017 को दिल्ली के होटल मेरिडियन में संपन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता समिति के माननीय सांसद डॉ. सत्य नारायण जटिया ने की। साथ ही बैठक में समिति के संयोजक माननीय सांसद डॉ. सत्यव्रत चतुर्वेदी के अलावा समिति के अनुभाग अधिकारी, श्री बी.एन. सक्सेना, समिति सहायक, श्री देवेन्द्र प्रसाद कुकरेती एवं रिपोर्टर, देवेन्द्र सिंह भी शामिल थे। निरीक्षित कार्यालय ऑयल की ओर से श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री बिश्वजीत राय, निदेशक (मानव संसाधन एवं वाणिज्य विकास), श्री सुशील कुमार सिंह, उप-महाप्रबंधक (प्रशासन), डॉ. आर. झा, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्रीमती गायत्री कुकरेजा, (पर्यवेक्षक सहायक) और पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय की ओर से श्रीमती सुषमा रथ, संयुक्त सचिव, एवं श्री डी. एस. रावत, परामर्शदाता (राजभाषा) ने बैठक में भाग लिया ।

बैठक की शुरुआत में श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने पारंपरिक रूप से समिति के उपाध्यक्ष एवं माननीय सदस्यों का बारी बारी से पुष्प-गुच्छ एवं शाल भेंट कर स्वागत किया। तत्पश्चात औपचारिक रूप से सभी ने अपना-अपना परिचय दिया। बैठक की शुरुआत में श्री उत्पल बोरा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने ऑयल इंडिया लिमिटेड का संक्षिप्त परिचय देने के साथ ही राजभाषा कार्यान्वयन के प्रचार-प्रसार एवं उसके प्रयोग को बढ़ाने की दिशा में ऑयल इंडिया लिमिटेड द्वारा किये जा रहे प्रयासों का भी उल्लेख किया।

संसदीय राजभाषा समिति की
पहली उपसमिति के साथ निरीक्षण बैठक
निरीक्षण तिथि : 24 जनवरी 2017
नई दिल्ली
Oil India Limited

समिति के माननीय उपाध्यक्ष, डॉ. सत्य नारायण जटिया ने निरीक्षण प्रश्नावली में प्रदत्त आंकड़ों की बिन्दुवार समीक्षा करते हुए ऑयल नोएडा कार्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में किये जा रहे प्रयास संबंधी कुछेक ऐसे बिन्दुओं की ओर ध्यान आकृष्ट कराया जहां और सुधार की गुंजाइश है। समिति के संयोजक और माननीय सदस्य श्री सत्यव्रत चतुर्वेदी द्वारा भी निरीक्षण प्रश्नावली पर आधारित अपने-अपने विचार और सुझाव दिये गये। बैठक के अंत में समिति के उपाध्यक्ष, श्री जटिया ने ऑयल के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री उत्पल बोरा को समिति के प्रतिवेदन के पहले आठ खंडों पर किये गये राष्ट्रपति के आदेशों के संकलन एवं ध्यान देने योग्य बातों की एक प्रति प्रदान की।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ बैठक का समापन हुआ।

ऑयल के हिंदी अधिकारियों की समन्वय बैठक संपन्न

Oil India Limited
हिंदी अधिकारी – समन्वय बैठक
HINDI OFFICER - COORDINATION MEETING

दिनांक 21 मार्च 2017 को ऑयल इंडिया लिमिटेड के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत हिंदी अधिकारियों की समन्वय बैठक ऑयल के क्षेत्र मुख्यालय दुलियाजान में कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) श्री प्राणजित डेका की अध्यक्षता में संपन्न हुई। ऑयल इंडिया में राजभाषा से संबंधित नीति, नियमों, अधिनियमों आदि के क्रियान्वयन की समीक्षा और राजभाषा प्रावधानों और विधानों को और भी अधिक बेहतर ढंग से क्रियान्वित करने के लिए क्षेत्रवार एक प्रभावकारी रोड मैप बनाना ही इस बैठक का मूल उद्देश्य था। इस बैठक में कार्यकारी निदेशक (मा. सं. एवं प्र) श्री प्राणजित डेका के साथ ही श्री सुशील कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) नई दिल्ली, श्री दिलीप कुमार भूयां, उप महाप्रबंधक (जन संपर्क) दुलियाजान भी उपस्थित थे। ऑयल के सभी क्षेत्रों के हिंदी अधिकारी भी बैठक में उपस्थित थे, उपस्थित सदस्यों के मध्य ऑयल इंडिया में राजभाषा क्रियांवयन की वर्तमान स्थिति के साथ ही साथ भविष्य में इसे किस प्रकार और भी बेहतरीन ढंग से क्रियांवित किया जा सकता है, जैसे गंभीर विषयों पर एक सार्थक परिचर्चा हुई और सक्षम प्राधिकारी द्वारा इस बैठक में राजभाषा के बेहतर क्रियांवयन हेतु कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय भी लिए गए। इस बैठक में लिए गये निर्णयों को और भी बेहतरीन ढंग से क्रियान्वित करने की संयुक्त जिम्मेदारी हिंदी अधिकारियों की है और सभी हिंदी अधिकारी इसे क्रियान्वित करनें के लिए पूर्णत: प्रतिबद्ध हैं। इस बैठक में लिए गये निर्णयों के सकारात्मक परिणाम आपको जल्द ही ऑयल के कार्यालयों एवं कार्यालयीन कामकाज मे दिखाई देने लगेंगे। हम कह सकते हैं कि इस बैठक का निष्कर्ष यही रहा कि राजभाषा के प्रचार प्रसार एवं क्रियांवयन में आप सभी की भूमिका भी अति महत्वपूर्ण है अत: अपना सर्वोत्तम योग देकर अपनी कंपनी को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान करें।

कोलकाता कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

हिन्दी कार्यशाला
HINDI WORKSHOP

दिनांक 04.04.2017 को कोलकाता कार्यालय में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिन्दी कार्यशाला के आयोजन के अवसर पर श्री ए. पॉल, महाप्रबन्धक (कोलकाता कार्यालय) ने कहा कि नई सरकार आने के बाद परिस्थितियां बदल रही हैं तथा अब मंत्रालयों से होने वाले पत्राचार में हिंदी का प्रयोग अधिक दिखाई दे रहा है। अत: आवश्यक है कि हम ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन नियमित रूप से करते रहें इनके आयोजन से कार्यालय में कार्यरत कार्मिकों को हिन्दी में काम करने में सुविधा होगी तथा उनकी हिन्दी में काम करने की झिझक दूर होगी। उन्होंने यह भी कहा कि इस प्रकार की कार्यशालाओं की उपयोगिता कोलकाता कार्यालय के लिए अधिक है क्योंकि इन कार्यशालाओं में कार्मिकों को राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी मिलती है तथा उन्हें हिन्दी में कार्य करने का अभ्यास भी कराया जाता है। प्रसंगित कार्यशाला में विभिन्न अनुभागों के कुल 15 कर्मचारियों ने भाग लिया और डॉ रमेश मोहन झा इस कार्यशाला में बतौर संकाय उपस्थित हुए। नामांकित कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन कार्य से संबंधित पुस्तक कार्यालय कार्यबोध वितरित की गई ताकि वे पुस्तक की सहायता से अपना कार्य राजभाषा हिंदी में सुविधापूर्वक कर सकें। कार्यशाला का समापन श्रीमती जयती दासगुप्ता के धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत करने के साथ हुआ। कार्यशाला का संचालन डॉ. वी एम बरेजा, वरिष्ठ प्रबन्धक (राजभाषा) द्वारा किया गया।

क्षेत्र मुख्यालय, दुलियाजान में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन

हिन्दी कार्यशाला
HINDI WORKSHOP
EMPLOYEES TRAINING & DEVELOPMENT CENTRE

दिनांक 08 मार्च 2017 को ऑयल इंडिया लिमिटेड, दुलियाजान के क्षेत्र मुख्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। ऑयल की इस कार्यशाला का आयोजन ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग के माध्यम से किया गया। इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में ऑयल के कार्यकारी निदेशक (मानव संसाधन एवं प्रशासन) श्री प्राणजीत डेका, महाप्रबंधक (ज्ञानार्जन एवं विकास विभाग) श्री आर के तालुकदार, उप महाप्रबंधक (जन संपर्क) श्री दिलीप कुमार भूयां के साथ राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गुवाहाटी से पधारे डॉ. रुस्तम राय, उपनिदेशक, हिंदी प्रशिक्षण योजना, श्री धीरजलाल, सहायक निदेशक, हिंदी प्रशिक्षण योजना और डॉ. आदित्य विक्रम सिंह भी उपस्थित थे। कार्यशाला दो सत्रों में आयोजित की गई थी। इसके प्रथम सत्र में राजभाषा से संबंधित नीति, नियम, अधिनियम आदि का परिचय कराया गया और द्वितीय सत्र में कंप्यूटर पर हिंदी और हिंदी के सॉफ्टवेयरों से परिचय कराया गया। कार्मिकों को उन हिंदी टूल्स के बारे में भी बताया गया जिनकी सहायता से वें अपना रोज का काम बिना किसी परेशानी के हिंदी में कर सकते हैं। सभी कार्मिकों नें कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लिया और बहुत कुछ सीखा और आपसी संवाद के क्रम में उन्होंने प्रशिक्षकों को आश्वस्त भी किया कि वह इसका उपयोग कर अपना ज्यादा से ज्यादा कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करेंगे। प्रसंगित कार्यशाला में क्षेत्र मुख्यालय के विभिन्न विभागों से कुल 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। राजभाषा में कार्य करने में आ रही दिक्कतों को दूर करने के लिए कार्यशाला में अभ्यास सत्र का आयोजन भी किया गया था, जिसमें कार्मिकों को राजभाषा में कार्य करने का अभ्यास करवाया गया और उनकी सभी समस्याओं का तात्कालिक समाधान विशेषज्ञों द्वारा सुनिश्चित किया गया। संकाय सदस्यों को स्मृति चिन्ह वितरण और डॉ. शैलेश त्रिपाठी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही कार्यशाला का औपचारिक समापन हुआ।

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, राजस्थान परियोजना, जोधपुर में दिनांक 11 अप्रैल, 2017 को एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें परियोजना कार्यालय के कार्यकारी निदेशक श्री निरोद रंजन डेका एवं मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं कर्मचारी संबंध) श्री माधुर्य बरुआ के साथ-साथ कार्यालय के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री हरेकृष्ण बर्मन ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी। कार्यशाला के मुख्य अतिथि तथा मार्गदर्शक आकाशवाणी, जोधपुर के कार्यक्रम अधिशासी डॉ. कालुराम परिहार ने कहा कि राजभाषा हिन्दी के प्रगामी प्रयोग के लिए हिन्दी के सरल शब्दों का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। हिन्दी विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा है और हमारी सोच भी हिन्दी अथवा प्रादेशिक भाषाओं में है। डॉ. परिहार ने प्रशासनिक क्षेत्र में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु आवश्यकता प्रतिपादित की। मुख्य प्रबंधक (प्रशासन एवं कर्मचारी संबंध), श्री माधुर्य बरुआ ने कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन की गति के सबंध में बताया। कार्यकारी निदेशक (राजस्थान परियोजना), श्री निरोद रंजन डेका ने भी सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा कार्यान्वयन में सहयोग देने हेतु आभार प्रकट किया । कार्यशाला के दौरान एक राजभाषा प्रदर्शनी भी लगायी गयी। कार्यशाला का संचालन श्री हरेकृष्ण बर्मन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) ने किया। श्री अजय कुमार मीणा के आभार प्रकट के साथ साथ कार्यशाला का सफल समापन हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित

Oil India Limited

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 17 मार्च 2017 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2016-17 की चौथी तिमाही बैठक का आयोजन किया गया। महाप्रबंधक (पाइपलाइन सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्र, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री हिरेण चंद्र बोरा के साथ-साथ पाइपलाइन के उच्चाधिकारियों ने इस बैठक में भाग लिया। बैठक के शुरूआत में उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री नारायण शर्मा ने उपस्थित सभी अधिकारियों का स्वागत किया एवं बैठक के उद्देश्यों की जानकारी दी ।

महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित इस राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में वर्ष 2016-17 के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित वार्षिक कार्यक्रम पर बिंदुवार चर्चा की गई। राजभाषा नियम, अधिनियम, संसदीय राजभाषा समिति आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। श्री मिश्रा जी ने आशा व्यक्त किया कि राजभाषा कार्यान्वयन समिति में उपस्थित सभी सदस्य अपना अधिक से अधिक कार्यालयीन काम-काज हिंदी में करने के साथ-साथ अपने विभाग में भी सभी को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करेंगे। महाप्रबंधक (पाइपलाइन सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्र जी ने राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रीय अस्मिता के साथ जोड़ते हुए उपस्थित सभी से आग्रह किया कि सभी अपना-अपना कार्यालयीन काम-काज यथा संभव हिन्दी में ही करें। उप प्रबंधक(राजभाषा) श्री नारायण शर्मा ने पाइपलाइन मुख्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर चर्चा करते हुए कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप कार्य निरंतर जारी है। उपस्थित सभी सदस्यों से राजभाषा हिन्दी में पत्राचार को बढ़ाने एवं कार्यालयीन काम-काज को गति देने का आग्रह करते हुए श्री शर्मा ने कंप्यूटर पर यूनिकोड के सहारे हिन्दी में कार्य संपन्न करने हेतु अपने-अपने विभाग में कर्मचारियों को प्रेरित करने की अपील की ।

उप महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री हिरेण चन्द्र बोरा के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात बैठक का समापन हुआ।

पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में राजभाषा कार्यशाला आयोजित

ऑयल इंडिया लिमिटेड, पाइपलाइन मुख्यालय, गुवाहाटी में दिनांक 18 मार्च, 2017 को प्रात: 9:00 बजे से एक राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया। पाइपलाइन के महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्र, महाप्रबंधक (टीटीआई) श्री अशोक दत्त, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) श्री हिरेण चंद्र बोरा के साथ-साथ पाइपलाइन के उच्चाधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला के शुरूआत में उप प्रबंधक (राजभाषा) श्री नारायण शर्मा ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया एवं कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी दी। सर्वप्रथम श्री शर्मा ने महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्र, उप महाप्रबंधक(प्रशासन) श्री हिरेण चंद्र बोरा एवं आमंत्रित फैकल्टी द्वय श्री एन.के. बरदलै एवं श्रीमती शर्मिला ताय को बारी बारी से मंचासीन कराकर फुलाम गामोछा से सम्मानित किया। महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री मिश्रा ने इस कार्यशाला का विधिवत् उद्घाटन करते हुए कहा कि "पाइपलाइन मुख्यालय में हम नियमित रूप से राजभाषा कार्यशाला का आयोजन करते रहे हैं और राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित प्रावधान अनुसार आज इस राजभाषा कार्यशाला का आयोजन हो रहा है । कार्यालयीन काम-काज में हिन्दी के प्रयोग की जानकारी देना कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य होता है। हमारे बीच हिन्दी शिक्षण योजना के फैकल्टी द्वय हिन्दी प्राध्यापक श्री बरदलै और श्रीमती ताय उपस्थित हैं मुझे उम्मीद है इनके मार्ग दर्शन में आप सभी को काफी जानकारियां मिलेगी। इसी विचार के साथ आज के इस राजभाषा कार्यशाला के विधिवत् उद्घाटन की घोषणा करता हूँ।" कार्यशाला में श्री बरदलै ने कंप्यूटर पर यूनिकोड में कार्य करने संबंधी विस्तृत जानकारी प्रदान की। श्रीमती शर्मिला ताय ने हिन्दी में नोटिंग ड्रॉफ्टिंग एवं हिन्दी शिक्षण-प्रशिक्षण संबंधी उपयोगी जानकारी प्रदान करते हुए लोगो से आग्रह किया कि बिना किसी झिझक के कार्यालयीन काम-काज हिन्दी में करें। साथ ही उन्होंने टिप्पण, आलेखन तथा मसौदा लेखन में आने वाली दुविधाओं का भी निदान करते हुए सहज व सरल भाषा से ही इसके निपटान पर जोर भी दिया। कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों ने काफी रूचि ली। पाइपलाइन के महाप्रबंधक (पाला सेवाएं) श्री बिजन कुमार मिश्रा ने भी राजभाषा कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति को देखते हुए संतोष व्यक्त किया तथा इसकी गति और बढ़ाने हेतु सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपील की। कार्यशाला का संचालन श्री नारायण शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने किया।

अंत में श्री सुनील कुमार राय के धन्यवाद ज्ञापन के पश्चात कार्यशाला का समापन हुआ।

हिन्दी प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत परीक्षाओं में उत्तीर्ण अधिकारी / कर्मचारी

सहर्ष सूचित किया जाता है कि पाइपलाइन विभाग के निम्नलिखित अधिकारियों व कर्मचारियों ने हिन्दी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नवंबर, 2016 में आयोजित हिन्दी प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत की परीक्षाएं निम्नानुसार उत्तीर्ण किया है

क्र.सं.	नाम	ऑयल पंजीकरण सं.	परीक्षा
1.	श्री नवदीप राय	202056	प्रवीण
2.	श्री अमृत सरकार	200243	प्राज्ञ
3.	श्री कमल दास	200610	प्राज्ञ
4.	श्री कुणाल गुरूंग	201997	पारंगत
5.	श्री बिमल दास	200559	पारंगत
6.	श्री येन गोयारी	202055	पारंगत

उत्तीर्ण सभी परीक्षार्थियों को हार्दिक बधाई।

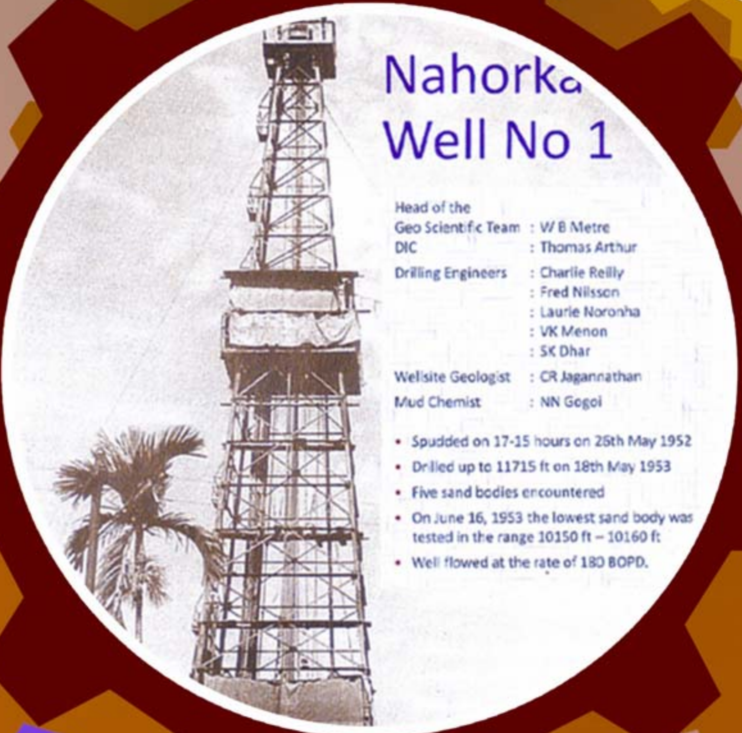

Nahorka
Well No 1

Head of the
Geo Scientific Team : W B Metre
DIC : Thomas Arthur
Drilling Engineers : Charlie Reilly
: Fred Nilsson
: Laurie Noronha
: VK Menon
: SK Dhar
Wellsite Geologist : CR Jagannathan
Mud Chemist : NN Gogoi

- Spudded on 17-15 hours on 26th May 1952
- Drilled up to 11715 ft on 18th May 1953
- Five sand bodies encountered
- On June 16, 1953 the lowest sand body was tested in the range 10150 ft – 10160 ft
- Well flowed at the rate of 180 BOPD.

MAIN PUMP HOUSE

INDIAN OIL CORPORATION LTD.
(ASSAM OIL DIVISION)

PAHAL

#GiveItUp
Feel *the* Joy *of* Giving

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

जन संपर्क विभाग

CIN : L11101AS1959GOI001148